शरद जोशी

जन्म 21 मई 1931, उज्जैन (म० प्र०)

शिक्षण यहाँ वहाँ, पता नही कहाँ-कहाँ। अन्त मे होल्कर महाविद्यालय इन्दौर से बी०ए०।

शुरू मे कहानियाँ, फिर जुडी पत्रकारिता, व्यग्य लेखन, भोपाल मे सरकारी नौकरी कुछ सालो और अब पिछले पन्द्रह वर्षो से स्वतन्त्र लेखन।

पहली किताब—'परिक्रमा'। फिर 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार इल्लियाँ,' 'तिलस्म', 'रहा किनारे बैठ', 'दूसरी सतह' और 'पिछले दिनो'।



नाटको का चस्का। 'अधो का हाथो' और 'एक था गधा उर्फ अलादाद खा' नाटको के प्रदर्शन सर्वत्र हुए।

फिलहाल बबई मे रहते है।

श्री गोकुलेशो जयति।

कविमण्डल

की

समस्यापूर्त्ति।

मिती माघ सु० ८ वार बुध सम्वत १९५३

तेरहवां अधिवेसन।

पाचो बान झरिगे।

बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

बड़े बड़े बीरन को विकल बिहाल करै
बिश्वामित्र जैसे जाके मोह-पास परिगे।
जाके मान-गजन प्रभंजन प्रभाव आगे
बज्रधारी बासव के गौरव उखरिगे॥ जौन
मीनकेतु जू के चोखे चारु चोपभरे चोजवारे
बान चन्दभाल चित्त अरिगे। पैनी धार पेखि
मृगनैनी के बिलोचन की बीर पंचबान जू
के पाँचो बान झरिगे॥ १॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी।

आयो रितुराज पै न आयो बृजराज काहे

वागन में कदम अनार अंब फारिगे । वेनी द्विज कैलिया कुहूकै लगी चारौ ओर वौरन के वृन्द भौन भौनन पसारिगे ॥ करत विहार कीधों काहू लै अनोखी नारि कीधों मो वियोग में समस्त ज्ञान हारिगे । कीधों पंचवान हर फेरि के भसम कीन्हे कीधों पंचवान जू के पॉचो० ॥ १ ॥

काशीनिवासी हलचद जी वक्सीय ।

गान करि थाकीं सुरनारि अप्सरा प्रवीन विविधि प्रपंच हम भली भॉति कारिगे । मेटि को सके है मरजाद रामदासन की सकल हमारे जू अखर्व गर्व गारिगे ॥ भभरि मुनीसपद परे हम पाहि बोलि परम कृपाल वे हमारे पर ढारिगे । देवरिषि सामुहे जू साहित सहाय हम हारिगे हमारे आज पाचौ० ॥

गये वीति आली री त्रिजामा के तिहुंन जाम नभ में नक्षत्र ये सकल मद पारिगे । कौन से छली के फद परिगे छबीले छैल र-

सिक समाजनि मे कहा आज आरिगे ॥ कौन हेत आये ना हमारे प्रानप्यारे सखी चौंदस के चन्द्रमा हूँ अस्तगिरि ढरिगे। उदै गिरि माहि भयो अरुन प्रकाश वास पचवान हूँ के अब पाचौं० ॥ १ ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

भरिगे सु पाटल सुगन्ध ते दिगंत सबै फूले कचनार चारु पंकज पसरिगे। परिगे सु कानन हमारे कोकिला के बोल कंत के बिनाही ये बसत अंत करिगे ॥ ढरिगे हमारे जान कान्ह कूबरी पै हाय माधव के मासहू की माधुरी बिसरिगे। जरिगे पलास रास कैधों खास पीके देस कैधों पंचवान के सु पांचौं०॥

जिला बनारस सरायमोहर्इ निवासी मुकुन्दलाल जी।

बौरे सहकार फूले टेसू कचनार कंज कुजत विहग गुजि भौर भीर भरिगे। विरह विशेष बस आवते विदेसी घर हिलि मिलि निज निज नारि सग थरिगे ॥ अजहूँ न आये

हाय निठुर मुकुन्दलाल मन वच काय सोति फन्दन मे परिगे। कैधों वहि देस वेस सिसिर बतास वह्यो याते थकि मार रह्यो पा०॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी।

परे हैं अहोस कोऊ कोऊ टक एक पेखैं कोऊ लगे संग घूमे ऐसे प्रेम भरिगे। कोऊ अति दूर भागे देखिबो चहे है नाहि वजर गिरे की भाँति हीय महा डरिगे॥ कोऊ हैं कराह रहे आह की उसासें लेत दसा या सुसील आज प्यारी नैन करिगे। मारन सु मोहन वसीकर उचाट तंत्र एकै संग पंचवान पाँचौ वान० ॥ १ ॥

कोपागजनि॰मा मारकडेलालजी उपनाम चिरजीव कवि।

उडत पराग कहूँ पौन मे दिखात नहीं फूले ना सुमन वृच्छ आतप ते जरिगे। गुजत न भौंर विना पाये मकरन्द त्योंही कोकिल न बोलैं विना आनँद उजरिगे॥ कठिन अत्रपन ते भयो ना वसत जाते आये नहि कत चि-

रजीव जू विसरिगे । जल के विहीन सूखि पंकज शरीर धारी प्यारे पचवान जू के पा०॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूंदी ।

बैठे हैं गुपाललाल प्यारी वर बालन में करत कलोल महा मोद मन भरिगे । ताही समै आती राधिका को दूरही तें देखि सौतिन के सकल गुमान गुन गरिगे ॥ चंदकला सारस से तिरछी चितौनि वारे नैन अनियारे नैक पीकी ओर ढरिगे । नेह नहे नायक के ऊपर ततच्छन ही तीच्छन मनोभव के पाँचौबान० ॥ १ ॥

लखनऊनिवासी लाला हनुमानप्रसाद जी ।

फरिगे कै कोकिल के कंठ वहि देस सखी कारिका करैया काकपाली कुल मरिगे। बन उपवन बाग वाटिका उजरिगे धौं ग्रीषम मैं ज्वाल की जलाकन तें जरिगे॥ कहै हनुमान कत परिगे अपर फद कै बसत ऐला-वर्त जानि जिय डरिगे । करिकै प्रपच पंच

वान कै प्रसून चाप पनच उतारि गे कै पाँ० ॥

श्रीगोस्वामी किशोरीलाल जी भाषा ।

कैधौं वाहि देस पै न आज रितुराज धायो कैधौं मलयाचल समीर कहूँ अरिगे । कैधौं भृङ्ग भाजे सुख माधवीलता तें मोरि कैधौं फुल्ल पूरित पलास पुज जरिगे ॥ कैधौं वीर वालम विदेस विसराने नेह कैधौं वालजाल में जके से जाइ परिगे । कैधौं कोकिलान आन देस को पयान कीनो कैधौं पंचवान जू के पाचो वान० ॥ १ ॥

आकर्पन मोहन वसीकर उचाटन त्यों मारन मजेजे मानिनी के पेखि डरिगे । ताप उनमाद आदि तंभन विसोपन त्यों संमोहन सुदरी सुलचन पै ढरिगे ॥ करना कमल आम केतकी अशोक ओक नख तें सिखानि लों निहारि हारि टरिगे । मान खरसान प्रेम पानिप महान खान जानि पचवान जू के पा०॥

अजमेरनिवासी किशोरीलाल जी रावत।

आये नाहिं कन्त या वसन्त छिति छाये
माँहि जानी ना विदेस उर कौन भ्रम भरिगे।
पी पी कै पुकारिवे की वानि धौं विसारि दई
कैधों दइमारे री पपैया वित मरिगे॥ भूलि
गे निकुंजन में गुंजन भ्रमर कैधों लुंज ह्वै
प्रभंजन के पुंज कुंज परिगे। कुसुम कमान
गयो टूटि धौं किसोरी आली कैधों पंचवान
जू के पाँचौं० ॥ १ ॥

गयानिवासी प गिरधारीलाल जी शर्म्मा।

ऊँचे स्वर बोलिवे की दौरि गैल डोलिवे
की अँचरा न डारिवे की पूरन निकरिगे।
गिरधारीलाल त्यों अमन्द हाँस हँसिवे की
खेलन में वसिवे की छन में विसरिगे॥ पर-
म प्रभान पगी प्रगटे तरुनताई तन मन पर
कछु औरै रङ्ग भरिगे। पाचौंवान बीर पंच
वान जू के लागे आज तेरे अङ्ग अङ्ग से त्रे पा०॥

रीवा मऊगञ्ज मिश्रसेवकश्याम कवि जी।

उन्नत उरोजन की आभा अविलोकि गज डारै कुम्भ धूर पकि पीरे वल परिगे। चिबुक निहार आम झूलत अचैन डार दन्त दुति हेरि ही अनारन विहरिगे॥ मिश्रश्यामसेवक कपोल गोल पेखि प्रभा टपके मधूक लगे कज कीच गरिगे। प्यारी भ्रू कमान नैन बानन की सान देखि पैं न पंचवान जू के पाचो०॥

कैधों पतझार वन बागन न होत उतै फूलहि न फूल के दवागिन मे जरिगे। गुं-जत न भौंर-भीर कैधों कज पुंजन में कुंजन मे कोकिलादि कूकत न मरिगे॥ प्यारे श्याम सेवक न आये अबहूँ लों हाय छाय रह्यो ही रे दुख पीरे अग परिगे। टूटी मानभंजन कमान नई कैधो दई कैधों पचबान जू के पा०॥

बाबू शिवनन्दनसहाय जी (जजी बांकीपुर)

आये रितुवंत छविवत कन्त आये नाहिं सिव सौंह सोच सोच प्रान गरे अरिगे। नेह

सब गरिंगे धों गेहही बिसरिंगे धों सौतिन चलॉक कोऊ फद पीय परिंगे ॥ बौरे आम झरिंगे बहार सब हरिंगे धों, फूल फुलवारी वह देस के उजरिंगे। कोकिलान मरिंगे धों मधुपान जरिंगे धों कीधो पंचबान जू के पा०॥

गयानिवासी विश्वनाथ जी

वाय त्रिधि तीन कैधो बहत न पौन वहाँ कैधों रसलीन ह्वै रसालन में जरिंगे। कैधों कचनार मौलसिरी न अनार फूले कैधो भौंर भीर वहॉ भौरन बिसरिंगे॥ विश्वनाथ आली जहॉ प्राननाथ बसै वहॉ कैधों ससि उगै नाहिं कोकिला न ररिंगे। मन अनुमान कैधों टूटि गो कमान रोदे कैधो पंचबान जू के पाचो०॥

गयानिवासी प शशिभाल जी।

प्रगट्यो बसन्त वन वेलिन विहग बाग सुन्दर तडाग जलजात पात भरिंगे। ससि भाल तापे गुजरन भौंर भीर करै सौरभित पौन चहुँओर मे बगरिंगे॥ देवता न बोले

हिय वेध्यो वहु वार वान तान तान कान लौं अनेक श्रम करिगै। परना प्रवेश भो महेश हृदै रच काम पचवान जू के जऊ पाचो० ॥

दरभंगा राज्यमाश्रयप० सिवप्रसादजी कवीश्वर।

भाखै देव देवपति रावरेनुसासन कौं पाइ कै उपाइ भरि कोटि कला करिगे। ज्ञान रूप नारद सरूप सुद्ध हेरि फेरि फेरि हिये हारि मानि आनि आनि अरिगे॥ नीके शिव मानस* निवासिनी सुकेसिनी के संयुत वसत सबै सङ्ग सखा टरिगे । कौनहूँ प्रपञ्च रञ्च चलै ना समाधि पञ्चवान के निसान वान पाँचा० ॥ १ ॥

जौनपूर निवासी पण्डित सीताराम जी शर्मा ।

कैधौं वहि देश काम चरचा न जाने कोऊ कैधौं वहि देश दुखदाई काम जरिगे। कैधौं वहि देशन नपुंसक वसे हैं सबै कैधौं विकराल जाड परते ठिठुरिगे ॥ आवत न काहे

* उर्वसी।

सीताराम जू विदेशी घरे गये परदेश कैधौं ग्यान गुन हरिगे । कैधौं वहि देश पंचवान को प्रवेश नाहीं कैधौं पंचवान जू के पाँचो० ॥

लाला मङ्गलदास जी कसबे पैंतेपुर जिला सीतापुर ।

पञ्चवान को पठान हाथ लै कमान वान इन्द्र की सलाह मान आपु सौंह करिगे । नारद को ध्यान भंज चित्त अनुमान ठान पाँचो शर मार तान मोघ तौन परिगे ॥ काम घवरान कंपमान खिसियान महा छूटो न मुनीश ध्यान सबै स्थान दरिगे । मङ्गल लजाइ के विदेह मुनिपाद गहे जागिये कृपाल मेरे पाँचो० ॥ १ ॥

जिला सीतापुर मौजे जैपारपुर बाबू अनिरुद्धसिंह जी ।

जाँनि विरहिनि यहु वधिक बसंत वीर बधिबो बिचार्यो तौलौं भाग मो उघरिगे। हुकुम दियो हो कोकिलान कैल भृङ्गन को इन सबहूं के तौ गरूर भले ढरिगे ॥ भनै अनिरुद्ध त्याहि औसर मैं प्रानप्यारो आय-

गयो ग्रह दुख द्वंद वृन्द टरिगे । सान सौं चढ़ायो जो कमान परतान तान लागी नहिं मेरे ऑंचो पॉंचो० ॥ १ ॥

बाबू भगवतीचरण सकसा जिला शाहाबाद ।

करिवे को नङ्ग ध्यान सभु को अनङ्ग चल्यो लोगन की सुद्धि अरु बुद्धिहूँ बिसरिगे । काम ते अधीर सब ह्वैगे छिन एक माँहि ज्ञानिन मुनीन ज्ञान अंकुर निकारिगे ॥ आइ सिव पाहँ यत्न करिके थक्यों है जब भोग दुखदाई काम लाजन ते गारिगे । नैनन उघारि के विलोक्यो त्रिपुरारी जवै भाषत नवीन तवै पाँचो० ॥ १ ॥

श्री भगवीनाथकवि कसबे पैंतेपुर ।

बोलि पिक पातकी पठावै है न प्यारो वेगि कारी उतै कोकिलौ दई के मारे मरिगे। गाय तान मधप संजोग ना सुनावैं जाय मेरो जान मालती बियोग वन्हि वरिगे ॥ सोचै बाल बैठी हेत जङ्गली अनागम को ऐसे में

समीर सर हू न उर आरिगे । कैधों मेरो नेह हीन अङ्गन उमङ्ग कीन कैधों पंचवान जू के पॉचो० ॥ १ ॥

प० महावीरप्रसाद शर्मा वैद्य कोढ जिला मिरजापुर।

तारक असुर भुजदण्ड बरिवण्ड भयो देखि परचण्ड ताहि देव वृन्द डरिगे । शङ्कर सुवन हेतु बोलि झपकेतु वेगि महावीर विनती विशाल सबै करिगे ॥ सुनतै सशङ्क मार परउपकार जानि आपुहि मृतक मानि शंभु पै डगरिगे । रुद्र को सरूप अवलोकि भीत ग्रस्त तहीं कम्पित शरीर भूमि पॉचो० ॥

प हारिकाप्रसाद पाठक वाक्षीपुर।

कैधो वहि देस जित जाय छाय कन्त रहे आये ना वसन्त वनबाग सब जरिगे । कैंधो भये मूक, कूक कोकिला करत नाहिं कैधों हा पपीहा सब देस वाहि मारिगे ॥ कैंधो अनुराग सो अलापै नहि फाग कोऊ कैंधो उन त्रिविध समीर मौन धरिगे ।, कैंधो प-

श्रवान को कमान गयो टूट कैंधो विरहिनि मारिवे में पाँचो० ॥ १ ॥

जिला दरभङ्गा निवासी बाबू श्रीविश्वनाथ झा।

पञ्चमी वसन्त आज लागतहीं एरी वीर टेसू ऋतुनायक के झन्डा से फहरिगे। केकी कोकिलान कुल कूके लगे कुञ्जन में ललित, पतानहूँ लतानद्रुम परिगे॥ माधवी अशोक कञ्ज मालती चमेली वेली विश्वनाथ अम्ब मौर भौर भीर भरिगे। टरिगे हिमत अंत डरिगे सिसिर सीत ढरिगे वसंत बन पाँचो०॥

दूसरी समस्यापूर्त्ति।

बगर्यो बसन्त है।

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी।

तरु पति झारन में कदम अनारन में आमन की डारन में सरस लसन्त है। वेनी-द्विज सरिता तड़ागन मे बागन मे क्यारिन मे कुसुमकलीन किलकन्त है॥ ऊधो यह ऊधम चिताय दीजो मोहन पै करत वृथाही ए

वियोगिन को अन्त है। वेलिन में वृज में नवेलिन मे केलिन में हाटन हवेलिन में वगरयो वसन्त है ॥ १ ॥

काशी निवासी पण्डित केदारनाथ जी।

अवनि अकासन मे कुसुम परासन मैं पंकज परागन मैं लालिमा लसन्त है। आमन के बौरन में भौंरन के भौरन मे वागन में वेलिमें वहार सरसन्त है॥ गयो परदेस घर आयो ना केदारनाथ विरह गँभीर पीर वाढ़त अनन्त है। कोऊ नाहिं मोकहँ वतावे वीर ऐसो ठाम जहाँ वजमारो नाहिं वगरयो वसन्त है॥ १॥

जिला बनारस सरायमोहन निवासी मुकुन्दलाल जी।

प्रफुलित पाटल पलास पदुमन पुंज पसरे पराग पारिजात पल्लुहन्त है। मधुकर माते मडरात मालती मरन्द कहत मकुन्द चारु चन्द्रमा लसन्त है॥ साधि पञ्चवान काम कान लौं कमान तानि कोइल कुँकाति

कचनार विगसन्त है । बौरे सहकार वन विरही बयारे वही बालम विहीन विष व० ॥

बाबू पजोध्यासिंह जो मधुबन जिला पाजमगढ़ ।

पादप को पुज पूरि गयो पीरे पातन सो पाटल प्रसूनहूँ परागन पगन्त है । कुहूँ कुहूँ कोलिया कदम्बन पै कूकै लगी कुञ्ज कुञ्ज काम की कलाहू प्रकटन्त है ॥ एहो हरिऔध कुन्द कञ्ज कचनारन मैं वगर वजारन विनोद वगरन्त है । ठौर ठौर झोरन लग्यो है भौंर झौरवारो वागन मे वौरवारो व० ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी ।

श्रीसिधि जहाँ पै होहु शुभ अस्थान महा सर्व उपमा के योग प्यारे प्रनमन्त है । राउर कुशल छेम सदा नीक चाहिये जू मम था कुशल जो भयो ना प्रान अन्त है ॥ मिले ना सुसील समाचार दिन ढेर भये जीव घबराय अति नैन तरसन्त है । सिगरयो बरयो

है गात सिसिर हिमन्त कन्त विगरयौ व-च्योहू चहै वगरयो० ॥ १ ॥

कूकनि सुकोकिल की वोलनि मधुर वैन अलि की अवलि अलकावलि दिमन्त है। अतर फुलेलन की महक सुसील चारु सीतल सुगन्ध पौन सुख सरसन्त है॥ सुखमा सुवाग गाल देतहैं गुलाव सोभा लाल ओढ़नी है सारी पीरी विलसन्त है। मनौ सो कुसुम्भ औ पलास सरसो है खिले प्यारी तन प्यारे आज वगरयो० ॥ २ ॥

वोपागजनि०सा.मारकंडेलालजी उपनाम चिरजीवकवि।

रूपन मैं रङ्ग मैं रवाज मैं रसीलनु के सीलनु सरोरुह को सौरभ रसन्त है। प्रीत मैं प्रतीत मैं सुरीत मैं रँगीलनु के डीलनु समूहन को साहस लसन्त है ॥ कवि चिरजीव केलि कौतुक कुतूहल मैं कामना कलित कीन्हे काम हरसत है। वानक मैं बुद्धि

मैं विमोहनी वधूटिन मैं विविधि विनोद लीन्हे वगरयो० ॥ १ ॥

पातन को झरिवो औ फूलिवो सुफूलन को तरु को स्वभाव ये सदा को सरसन्त है । त्योंही मत्त होय होय गूंजिवो औ बोलिवो हू भौंर कोकिलान मैं स्वभावही लसन्त है ॥ ईश ते विमुख ह्वैके जीव चिरजीव आज रच्यौ लोक धन्ध जो ये दीसत दिगन्त है । कामी पुरुषौं को ये हैं झगरो जहान बीच सॉच मैं न कहूँ प्यारे वगरयो० ॥ २ ॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूंदी ।

पीतम नैं जावन की विरियॉ तुह्मारे अगै दृढता दिखाय कीनी शपथ अनन्त है । लागत वसन्त यहॉ शसय रहित ऐहौं तादिन तै तू हू नितवासर गनन्त है ॥ चन्दकला चैतमास सारो ही वितीत भयो आये ना गुपाल मन तचत अत्यन्त है । ताको हेत

आन तो न चितमैं चढ़त कछू मेरे जानि आली ह्वाँ न बगरयो० ॥ १ ॥

श्रीगोस्वामी किशोरीलाल जी पारा ।

सालन में तरुन तमालन रसालन मे लोनी लता जालन मे लपटि लसन्त है । गेंदा गुलदाउदी गुलाब कचनारन मे दाड़िम की डारन में गरकि गसन्त है ॥ लालन मरालन मे भौंर भीर भालन मे पिकन पराग पौन हू मे सरसन्त है । बाग वन बीथिन विहार वाटिका मे वेस वनक बनाये वीर व० ॥

हरखि हियेमे हनै पुलकि प्रसून पुंज पाँचो बान तान मीनकेतन दुरन्त है । कुहूँ कुहूँ कोइल कसाइन करत कोपि मधुप अलाप दाप धीरज नसन्त है ॥ चन्दन ते चाँदनी तें चन्द अरविन्दन ते तृविधि समीरन ते दाहत दिगन्त है । वारि वन्हि विरह विसाल वड़वानल सी विरही विदारै वीर व० ॥

गयानिवासी ॥ गिरधारीलाल जी शर्म्मा।

झरि गये भूप के गुमान किधौं पत्र पुञ्ज गुञ्जे मुनि वृन्द किधौं भौर रसवन्त है। गिरधारीलाल है विदेह के प्रताप फैलो कै विदेह के प्रताप फैलो दरसन्त है ॥ कठिन पिनाक किधौं प्रवल वियोग दिसै रामबांहु वलकै वियोगिनि कै कन्त है। चमकै जवाहिरात कैधौं है सुमन मञ्जु भ्राजै धनुयज्ञ कैधौं वगरयो० ॥ १ ॥

विथुरी अलक लोल डोलत भँवर भीर झलकै सुहाग फूलि किंसुक अनत है। गिरधारीलाल लाल नैन नवपल्लव है झरत प्रस्वेद मकरन्द सरसन्त है ॥ चलत उसाँस मंजु मलय समीर तित्र पूरित परागन सुगन्ध रसवन्त है। टूटी मरकत माल गिरे पत्र पुञ्ज पेरु वीर घलवीर पर घ० ॥ २ ॥

कोकिला की कूकनि विराजै तान तायफे की सुमन ज्योति दीपत अनत है।

फैलत है इतर की लपट मलय पौन अमल फरस स्वेत चन्द्रिका लसंत है ॥ गिरिधारी लाल जू कविन्द भौर मौज पावै लहि लहि द्रव्य मकरद रसवंत है। भूपति कन्हैयालाल तेरे दरवार वीच वारहो महीना रहै वग० ॥

बाबू शिवनन्दनसहाय जी (जजी बांकीपुर)

युगल कपोल खिले लाला औ गुलाव सोई वापै तिल छवि भौंर छौना छविवत है। अतसी के फूल से वहार देत नासा देखो दोऊ कर पल्लव सु पल्लव लसंत है॥ कचुकी कुसुभी लसै कुसुम सो फूल जानो वानी सुख-दानी सिव कोकिल कलन्त है। सारी पीत-वारी सोहै सरसों किआरी सोई प्यारी तुव छवि माहिं वगन्यो० ॥ १ ॥

श्री-ठा० महेश्वरबक्ससिंहजो तालुकेदार रामपुर मथुरा।

गुलम चमेलिन पै वेला आदि वेलिन पै महल हवेलिन पै सुभग लसन्त है। दासी दास चेलिन पै अवला नवेलिन पै अश्व गज

जेलिन पै शोभित निरन्त है॥ नारि अलबेलिन पै यूथ औ अकेलिन पै कंठमाल सेलिन पै आभा सरसंत है। सीस औ हथेलिन पै भाषत महेश्वर जू पंचमी वसंत पाइ व० ॥

बाबू दामोदरसहाय सिंह रत्नपुरा छपरा।

दामोदर दर में दरीन में दरीचिन में दम्पति में दुति में दुरित में दुरन्त है। रस मे रसिक में रसाल में रसीलिन मे रागन मे रंगन मे रगन रसन्त है॥ फूलन मे फल में फलक मे फरसहू में फहर फहारन में फवन फवन्त है। बसुधा में वन में वितान मे वगीचन में वारिन में वारुनी में० ॥ १ ॥

गयानिवासी विश्वनाथ जी

चन्द सम आनन अमन्द हास कर कन्द कुन्तल अनन्द सों मलन्द सरसंत है। किंसुक नखावली लता है बाहु भावली त्यों वायु सुखदावली त्रिविधि स्वास तन्त है॥ पीत वास सरसो सुमन भास होत अति वंसी

स्वर रास कोकिलान दरसन्त है। विश्वनाथ वदत विमल वृन्दावन बीच वासुदेव वपुष में वगरयो बसत है ॥ १ ॥

गया निवासी कवि वासुदेव जी

कलिका कलित कुंज ललित प्रसून फूले वलित वितान कैसी वंजुल लसत हैं। मजुल मलिन्द मकरद छाकि माते पुनि मलयज पौन मंद मद सरसंत है॥ ठौर ठौर कोकिल कलापन रचत सोर वासुदेव चंद सो चकोर तरसत है। अन्त होन चाहे मेरो कंत नहीं आयो हाय मैन वलवंत सङ्ग वग० ॥

गयानिवासी प शशिभाल जी।

चहकन लागी चिरियान चित चाव चढ़े चंचरीक चहूँओर घूमे हरसंत है। ससिभाल सुन्दर समीर सौरभित चलै गैल गैल फैल रहो आनद अनन्त है॥ लहकै हमारो मन प्यारे के विहीन आली देखि देखि मत्त सह कामिनीन कन्त है। विथित वियोग विरहा-

१५३०

गि मे दहत देह तापे हिय वेधिवे को ब० ॥

पटनानिवासी प० गोवर्द्धननाथपाठकउपनाम नग कवि ।

मंदिर वसती औ सिंहासन वसती वीर चँदवा वसंती पिछवाई हू लसत है । वसन वसन्ती अरु भूषन वसन्ती सबै अङ्ग में ब-सन्ती दुति उठत अनन्त है ॥ करति समाज तेऊ सखिन वसंती वनी रागिनी वसत गाय गाय हरखत है । उड़वत अबीर लै मूठिन वसन्त रङ्ग कवि नग सगरयो ये वगरयो० ॥

कामोडनिवासी कवि राव मवलजी ।

निच निच सुख अनुकूल नरनारिन को मन उनमत्त सोक सकल नसन्त है । वसन वसंती रङ्ग ललित लपेटा आदि सारी आदि त्योंही वनितान के सुहत है ॥ नवल भनत अङ्ग मद मद लागे सीत वृच्छन पै मिष्ट वैन कोकिला पढ़त है। गावत गवैया वृन्द फूले वृच्छ आमन के जित अवलोको तितै व-गरयो वसत है ॥ १ ॥

दरभगा राज्य मान्यवरप॰सिवप्रसादजो कवीश्वर।

मनहरन छन्द ।

तरु सहकारन मै और कचनारन मै विटप अनारन मै नारन मैं गंत है। सहर अगारन मै आपगा-कगारन मै अखिल अखारन मै खारन खिलंत है ॥ श्रीशिव सुकवि पिक पंचम उचारन मै विपिन विहारन मै जारन रमंत है। हारन पहारन मै दीसै द्वार द्वारन मै वार वार वारन मै बग० ॥ १ ॥

वेसुमार सेन को उतारि सिंधु पार जाइ सिखर सुवेल वसो रघुकुल-कंत है । उत्तर दिसा में बंदरन के मुखारविन्द शिव कवि देखि मंद-उदरी कहंत है ॥ कुसमय कौन उतपात होन चाहत है प्रफुलित पाटल पलास दरसंत है । कन्त सरसंत यह समयो हिमंत है न सिसिर को अंत है न ब० ॥१॥

जौनपूर निवासी पण्डित सीताराम जी शर्मा ।

वागन में वन मे वगीचन में वीथिन में

वेलिन में अजब वहार विलसंत है। चारो ओर हाटन में वाटन में घाटन में केलि रस हाटन को ठाट दरसन्त है॥ नदी नद घारन में कूलन कछारन में नारन पहारन में मोद सरसत है। जहां देखो तहा सीताराम साजे साज आज सिगरो जहान बीच बग०॥

श्रीसा० कु० श्रीमान्लाल त्रिलोकीनाथसिंह जी भुवनेश।

वजुल बगीचन मे घर वौर वीचिन में वैन मे विहंगन विशेष विलसंत है। विधु के विभासन में वारिज विकासन में वेलन के वासन में बीर विरमन्त है॥ विदित विभावरी में वावरी में भुवनेश वाल वल्लरी में वेश वातन बहन्त है। बनन में वीथिन में व्योम में वनस्पति मे वारिधि में वसुधा में बग०॥

विमल विलोचन में वक्रित विलोकनि में वपु में वनक में वरण विरमन्त है। विधु से विभासित वदन वनितान वीच विविध विधान भुवनेश विलसन्त है॥ वाजू में विजा-

यठ मे वेदन में बंदिन में बॉक बिछुवा में बेस विभव वहन्त है। व्रज मै व्रजेस मे विदित व्रज बारन में बिपिन विहारन मैं व० ॥

लाला मङ्गलदास जी कसबे पैंतेपुर जिला सीतापुर ।

बाग फुलवारिन पै महल अटारिन पै अश्व भूमिधारिन पै दे[illegible] बरसत है । गली खेत क्यारिन पै भामिनी दुलारिन पै गोटा चीर सारिन पै राजत निरत है। अब निम्ब डारिन पै वृद्ध ज्वान वारिन पै यूथप ॲवारिन पै अधिक लसत है ॥ गुणी औ अनारिन पै वैरी हितकारिन पै मङ्गल भू चारिन पै व० ॥

जिला सीतापूर मौजे जैपारपुर बाबू अनिरुद्धसिंह जी ।

पावस पियारो सुखदायक हमारो यातें हरी हरी लतन के कुंज क्या लसत है । कवौं घन देके ॲधियारी झपि आवै मोर शोर को मचावे मोद अति सरसत है ॥ अनिरुद्ध आवत करन पतिभार लाग्यो यह उदासीन

रूप ही ते दरसंत है। ही को हाल कहौं तोसों नीको नहिं लागै मोहिं जौन चहुँओरन में वगरयो० ॥ १ ॥

बा० हजमदमसहाय जी जिला भारा बखतियारपुर ।

कल कचनार कज पुंज को विलोकि 'ब्रज' सुन्दर मलिन्द हिय अति हुलसंत है। सरसो प्रसून सुचि सौरभ गुलाब केसू किंशुक पलास फूले कोकिल कलत हैं॥ मल्लिका सु मंजु मोतिया त्यो मालती हूँ वेली सेवती समूह सु चमेली विकसत हैं। आली तरसत हिय होत बिन कंत हाय पेख चारु चमन में व० ॥

बाबू भगवतीचरण सकसा जिला शाहाबाद ।

आवत बसत देखि सुन री पियारी सखि बाग औ बगीचा चहुँओर छविवंत है। ऐसो सुखकाल पीव जावन विदेस कहै सुनि सुनि बात मेरी गात तो दहत है ॥ हारी हौं बुझाय ताहि कहौं री नवीन सौंह मेरे कहे नाहि कछु मानत सु कत है। सब तो उछाह

भरे घर में अनन्द करैं मोको दुख देन हेत व०॥

गयानिवासी रामलाल भैया गयावाल ।

चन्द चमकीले चारु चाँदनी चटक दारु
व्योम स्वच्छ भारु शुभकारु दरसन्त है । म-
ञ्जर रसाल धारु मौलसिरी उजिआरु तरवर
डारुलता भूमि परसन्त है ॥ रामलाल भने
हाल विरही विहाल अति मदन कराल सर-
जाल वरसन्त है । ऐसी समै कन्त सोरी
रूसै मतिवंत कौन देख लौ दिगंतन लौं व०॥

श्री जगजीलालकवि कसबे पैंतेपुर ।

वारिज मैं वारि मैं बयारि मे विहङ्गन व-
सुन्धरा मैं वसु मे वहार विलसन्त है । व्यो-
मह्‌ मैं वन्हि मैं विभाकरी विभाकर मैं वि-
भव-विभाकर विमल विकसन्त है ॥ बानी
बारवधु में विबुध बुध-वृन्दन मैं विद्या मैं
विवाद मे विनोद वरसन्त है । विथिन मे
विपिन वगीचन मैं वेलिन मैं ब्रज मैं न-
वेलिन मैं वगरयो० ॥ १ ॥

परिभूत पिक मे पलास पारिजात हू मे पौन में पराग परिमल परसन्त है। माधवी में मधु में मधूक में मधुप हू मे मधुवन माधव मे मोद मधुरन्त है ॥ जल में जलधि मे जलधि जात ज्योतिन में जङ्गली जगत जीव जालन जगन्त है । वेला वेलियान मे नवेलियान बागन में वाटिकान वीथिन मे ब० ॥२॥

दरभङ्गा श्रीशिवप्रसाद जी कविश्वर के पुत्र दवीसरन कवि।

कलित कपासन मैं पुहुप पलासन मैं बसन सुबासन मैं दूनो दरसन्त है । देवी कुज कुञ्जन मैं भौंर भीर गुञ्जन मैं मंजु कल कञ्जन मैं पुञ्ज परसन्त हे ॥ कामसर चापन मैं पञ्चम अलापन मैं कोकिल कलापन मैं कैसो किलकन्त है । बारन बयारन मैं बनितान-तानन मैं बनन मैं बागन मैं ब० ॥ १ ॥

अम्बर अटम्बर मैं अपर पितम्बर मैं अवनि अडम्बर मैं पेखु परसन्त है । सुमन सु-

गन्धन मैं अलिमद अन्धन मैं किंसुक के कन्थन मैं सुख सरसन्त है ॥ विपुल विहङ्गन मैं वारि की तरङ्गन मैं वाम की उमङ्गन मैं देखु दरसन्त है। वीथिन बजारन मैं जारन उजारन मैं वनन मैं बागन मैं ब० ॥२॥

उपनिगोछन्द परकीया प्रोषितपतिका।

न सरदै हिमन्त है। न सिसिरै लसन्त है ॥
दुखद तोर कन्त है। न बगरो बसन्त है ॥

रामप्रसाद जी सिकन्दरपुर क़ुर्था जिला गया।

आयो नन्दलाल लिये गोपिन निकुञ्ज माहिँ ठौर ठौर बेलिन पै भ्रमर लसन्त है। आम कचनार अरु मालती सोहायमान चम्पा औ चमेलिन की कलियाँ खिलंत है ॥ जूही औ अनारहू के फूल फुले भाँति भाँति क्यारिन कह्लारन की शोभा सरसन्त है। सन्त कहै केलि करैं वाटिका में नन्दलाल सङ्ग सखियान जहां बगरयो० ॥ १ ॥

प० महावीरप्रसाद शर्मा वैद्य कोठ ज़िला मिरजापुर।

नगर नगर भूमि डगर डगर आज कैसो कदतूहल वहार दरसन्त हैं। चातक सुकीर पिक मुखर वियोगी उर देत हैं दरारे जोगी सान हुलसन्त हे ॥ नाना भाँति फूले तरु सुवर सुगन्धवारे त्रिविधि बयारि बहैं मोद सरसन्त हे। बागन तड़ागन परागन वो रागन सैं जहाँ अवलोकौ तहाँ व० ॥ १ ॥

प० द्वारिकाप्रसाद पाठक बाकीपुर।

मञ्जरी रसाल तरु भौरन पै दौर दौर औरे भाँति कोकिला पपीहा किलकन्त हे। कुजन मे और भाति गुजन करत भौंर औरे कछु डौर लता विकसन्त हे॥ लहकि पलास औरे सेमर के डाढि गये नारि नर इत उत वहकि फिरन्त है। बाग वन वेलिन मैं बाट औ हवेलिन मैं वनिता नवेलिन मैं व० ॥१॥

जिला दरभङ्गा निवासी बाबू श्रीशिवनाथ झा।

वरन कुसुम्भ नव सुमन सरीखो लसे

गुलफ गुलाबकलिका सी छविवन्त है । अँगुली अनूप कचनार की कलीकी ऐसी मोतिया कलीन नख अवली गसन्त हैं ॥ गुंजत दुरेफन से जेहर झनक जाहि तरवा ललित दुति कक्ष विकसन्त हे । सुखमा अनन्त बिश्वनाथ दरसन्त खूब अम्ब--पग बाग बर बगरयो बसन्त हैं ॥ १ ॥

बिध्यर्षिन पण्डा भगवानदत्त दूबे कवि ।

बन मे घनज में विशेषि बन वेलिन में नवल नवेलिन में अति सुखवत है । बाग में बगर में बितान तान रंगन में अङ्गन में अधिक अनूप दरसंत है ॥ भगवान भाग में सोहाग अनुराग हू में जागत जगतजोति जोस जसवंत है। जीव में जमीन में जवाहिर सु जोवन में जालिम जुलुमदार बग०॥

ताल में तमाल में लतान कोकिलान हूँ में आमहू में सुघर सुछबि दरसत है । सर-

सों में सर में समाज राजकाज हू में साज हू मे रमक रसायन लसंत है॥ भगवान भोडर मे भूमि भव्य भावना में भामिनी में भोग में सु भूरि विलसंत है। वन में वनज में वनाव वन वेलिन में महल हवेलिन में वगरयो वसन्त है ॥ २ ॥



श्री गोकुलेशो जयति।

कविमण्डल

की

समस्यापूर्त्ति

मिती फाल्गुण ब० ८ बार बुध सं० १९५३

चौदहवां अधिवेशन

मन्त्र पढि लाल पै गुलाल जब डार्यो है।

बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

होरी खेलिवे को साज साजि बृजराज
आज ग्वाल बाल लैके इत गैल को पधारयो
है। उत वृषभानुजा सखीन सङ्ग लै के मन-
मोहनै हराऊं यही हिय में बिचारयो है॥
ज्योंही बलबीर मूठ तानी राधिका पै त्योंही
राधे आधे नैन पेखि अङ्गन सम्हारयो है।
छायो अनुराग फाग खेलिवो भुलायो मन
मन्त्र पढ़ि लाल पै गुलाल जब डारयो है॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी ।

इत ते गोपाल ग्वाल वाल लै उताल धाये
उत ते किशोरी आनि चट ललकार्‌यौ है ।
बेनी द्विज इत पिचकारी रंगवारी चलैं उत
ते नवेली कोटि कुकुमा प्रहार्‌यौ है ॥ हो-
डाहोडी दलन दुहूँ में परी बाँकी वर हिम्मत
हिये ते कोऊ नेकहू न हार्‌यौ है । बावरो
सो तवही बनायो आनि राधिका ने मन्त्र०॥

काशीनिवासी हुलचंद जी बलभीय ।

होरी खेलिबे कौ निज जूथ लै किसोरी
आज आइ नन्दगाम माहिं लाल ललकार्‌यो
है। सुनतै गुविन्द सँग लै कै ग्वाल वाल वृद
आइ रंग जङ्ग माहि सुजस बगार्‌यो है ॥
ताही समै आई श्रीकुमारिका सखीन संग
परम प्रताप पुंज आपनो पसार्‌यौ है। लीन्हो
है तुरत ही लिखाय फाग-जैतपत्र मन्त्र० ॥

काशी निवासी पण्डित केदारनाथ जी ।

घोर घहरान डंफ मंजुल मृदंगन की ढो-

लन की धमक धमार धूम पारयो है। छूटैं पिचुकारी मानो महत मघा के बुंद केशर कमोरी भरि रङ्ग अङ्ग ढारयो है॥ मान्यौ स्याम स्यामा सङ्ग कठिन केदार फागु व्योम ब्रजमंडल गुलाबी रंग धारयो है। हारयो तबै मोहन कुमारी-वृषभान जू तें मंत्र० ॥ १ ॥

छबीले कवि — बनारस।

होरी कौन खेलत को गावत धमार काहि ऊधम सुहाति काहि धीरज न धार्‍यो है। सुकवि छबीले कहूं अबिर अटाले परयो केशर कहूं है कहूं पिचका पवार्‍यो है॥ मुकट कहूं है कहूं बाँसुरी परी है ऐसी मोहर मजा लों ग्वाल गोल पै बगार्‍यो है। पड़िगौ जवाल ब्रजमंडल में चाल वह मंत्र० ॥ १ ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदास जी।

खेलन को होरी गोरी लै लै रोरी झोरी सङ्ग कीरति-किसोरी नंदगाँव पै पुकार्‍यो है।

धाये नदलाल ग्वाल बाल सखा सङ्ग लीने घूँधर गुलाल की मचाय रंग पाऱ्यो है॥ धमकि धसी है धाय ललिता किसोरी संग फेट गहि माधव कों पकरि पछाऱ्यो है। देखि छवि बाल की बिवस बिकाने हाल मंत्र० ॥

जिला बनारस सरायमोहन निवासी मुकुन्दलाल की।

फाग की चढाई ठानि जाई वृषभान जू की आई खेलभूमि मन खेलिबो बिचाऱ्यो है। सखन बराय धाय पहुँचि मकुन्द जू पै भौंहन अमेठि दृग कोर तें निहाऱ्यो है। कब भरि पिचुकी चलावति भरति कब लखि न परत चपला सुभाव धाऱ्यो है॥ लकुट मकुट पट बाँसुरी की भूली सुधि मंत्र० ॥ १ ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल की।

आये स्याम स्यामा भौन होरी के बुलाव माहिं काहू ने पखारयो पाँव काहू चौंर ढाऱ्यो है। काहू पान बीरी लौंग इतर इलायची लै कनक परात साजि फर्स आनि धाऱ्यो है॥

सकल सुसील भई खातिर अनेक भाँति किंतु महामोद होत तबही निहाऱ्यो है। कढिके सहेटन तें चतुर सखी सों प्यारी मत्र० ॥

कोऊ गहि बाँह लीनी कोऊ पट छीन लीनी सीस को मुकुट कोऊ हँसि के उताऱ्यो है। कोऊ मुरली लै भजी कोऊ लकुटी लै खमी कोऊ उरमाल तोरि मोतिन बिखाऱ्यो है॥ कोऊ सराबोर करि रङ्गन सों कीनी तङ्ग अजब धमार धूम अबही निहाऱ्यो है। कीरतिकिसोरी गोरी सखिन सुसील सैन मंत्र० ॥

कौपागजनि-वा मारकंडेनामजी उपनाम चिरजीवकवि।

होरी रची ब्रज में किशोरी सब गोपन की जामें नन्दलाल जाय ऊधम उभाऱ्यो है। काहू को सु अङ्क लाय अबिर लपेट्यो मुख काहू को सुरङ्ग डारि कंचुकी बिगाऱ्यो है॥ भूलि गई सारी घमाचौकडी गुपाल जू की जब चिरजीवी सबै साहस सम्हाऱ्यो है। झुंड मैं झमकि बाल अतिहि उताल चाल मन्त्र०॥

व्याकुल भई हैं सब कान्ह के डॅसे ते बाल फाग मे अपानी जब छबि को बगार्‍यो है। हाथ पिचुकारी रही झोरी में अबीर रही गोरी रही भौंचक न हिम्मत पसार्‍यो है ॥ लहर चढै ना अब काहू को सु चिरजीव राध जब कढि के अपानो रङ्ग ढार्‍यो है। सुगुध भये से प्यारे जहॉ के तहॉई रहे मन्त्र० ॥ २ ॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूँदी।

गावत हो बॉसुरी बजावत हो नीकी भॉति नाचत नचावतैं मनोज मद मार्‍यो हैं। दौरि दौरि डारत अबीर ग्वाल बालन पै नेह लह्यो सबही के इक सों निहार्‍यो है ॥ चंदकला देखो अब औरै भॉति दीखत है तन की सुरति ना सनेह बिसतार्‍यो है। इक टक राधिका के मुख को निहारत है मन्त्र० ॥ १ ॥

अयोध्यानिवासी कविराज लछिराम जी।

आई घरें ऊधम धमारि खेलि तू तो भले नगर नगर झोर झगर बगार्‍यो ह। लछि-

राम वै तो भरे मदन मरोर मन मरम न खोले यों भरम हिय हान्यो है॥ जटित अँगूठी छिगुनीन के ललान सग मण्डित मूठीन यों अतक अवतान्यो है। चकचौंध लाली की प्रभा पै परतंत्र बाल मंत्र० ॥ १ ॥

बिरसौंहैं लोचन कपोल तिरछौंहे भौंहैं नख सिख रूप को तरङ्ग अवतान्यो है। लछिराम काकपच्छ कुंडल करन वेस गर वनमाल पर चमक सँवान्यो है॥ आनँद अभंग रंग चौदहो भुवन चारु मधुवन ऊधम धमारि पर वान्यो है। सौगुनी प्रकासै सोभा वदन मदन बाल मंत्र० ॥ १ ॥

कथ्यनजानिवासी लाला हनुमानप्रसाद की।

छाड़ि ग्वाल गोल परथो गोपिन की गोल आपै पिचकी चलैबो, गारी गैबो हिय हान्यो है। ओढि लीनी चूनरी अँजाइ लीन्ही अंजन हू हाहा खाइ छूट्यो पद पदुम निहान्यो है॥ मूठ तु वा मूठ में मूठीकरन सीखा कहा

हनूमान रूप जस त्रै जग उजार्‍यो है। जग मनमोहन की मोहनी सुमोही वीर मन्त्र० ॥

श्रीगोस्वामी किशोरीलाल जी बाग।

रतन अमोल विन-मोल मन मोहन कों लीनो लली नेक जब घूघट को टार्‍यो है। विवस बिके से छैल छकित लिखे से लसैं कुमकि किशोरी कुकुमा लै जब मार्‍यो है॥ चमकि चितौत चहुँ चतुर चली ना चाल प्यारी पिचकारी लै सुरंग जब धार्‍यो है। लाल करि दीन्हो बाल नख ते सिखा लों मैन मन्त्र पढि लाल० ॥ १ ॥

अजमेरनिवासी किशोरीलाल जी रावत।

नाच्यो व्रज फाग औ धमार राग नाच्यो नभ राच्यो रङ्ग रातो रूप सुंदर सवार्‍यो है। आइ नंदलाल गाइ गारी ग्वाल बाल सङ्ग कीरतिकुमारी द्वार अबिर बगार्‍यो है॥ रूढ़ि वृषभानुजा उताली भौन भीतर तें आरती उतारि तापै तन मन वार्‍यो है। रहिगो

चकित ठाढ़ो चित्र सो किशोरी मोह मन्त्र० ॥

रीवा मऊगञ्ज मिश्रसेवकश्याम कवि को।

पान देत मन ऐंचि पानि कर लीन्हो प्यारी अंतर सुवास ब्रज अन्तर पसान्यो है। केसर लगाय गात कम्पित कटीलो कियो अंजन सु ऑंजि आनि उर भै निकान्यो है॥ चल दृग वीर श्यामसेवक सुप्रेम बाँध्यो बेंदी जरी जन्त्र जिय जादू फेर पान्यो है। मोहर० वस भूल्यो ख्याल जुत मुसकान बैन मन्त्र० ॥

बलदेवनगर जिला सीतापुर निवासी द्विज बलदेव कवि।

आवत इते तू अनुराग भरी बागन में मिलिबे को फाग ब्योत विसद विचारो है। जादू भरे नैनवां नशीले द्विजबलदेव छूटी लट व्याली वेग विष सों बगारयो है॥ तिलहू तुलत ना तिरीछे ताकि ताने कहा त्योर ते तिहारे मीनकेतु तीर तान्यो है। छाय दीन्हो मोहिनी सी मोहि मन लीन्हो बाल मंत्र पढि लाल पै गुलाल० ॥ १ ॥

दासापुर निवासी द्विजगग कवि।

आई वरसाने सों सलोनी नदगाव ओर
फाग की वहार में बिनोदही विचाऱ्यो है।
द्विज गङ्ग गहि के गोविन्द को गरूरवारी
सारी जरतारी रत्न साज सिर धाऱ्यो है॥
वनिता बिरचि वेस लाई प्रानप्यारी पास
सुखमा बिलोकि कै मनोज हिय हाऱ्यो है।
मंद मुसुकाय विधुवदनी वसीकरन मत्र० ॥

पटना निवासी प० गोवर्द्धननाथपाठकउपनाम नग कवि।

देखो सखी कैसी आजु ब्रज मे मची है
फागु जाकी छवि देखि मद मैन गर्व हाखो
है। इत नंदलाला उत नव ब्रजवाला दुहूँ
पिचका सु हेत रंग केशर को गाखो है॥
खेलन की सौंज साजि थालन धखौ है वहु
कुकुमा अबीर हरि तीय पर माखो है। नग
जू विवस भये गारिन की नारिन ने मंत्र० ॥

जौनपूर निवासो पण्डित सीताराम जी शर्मा।

आज धूम होरी को मच्यो है वरसाने बीच

साजे ग्वाल बाल नंदलाल लै पधार्यो है। इतै वृषभान की दुलारी लिये गोपिन को उतै सबै छैलन समूह ललकार्यो है ॥ आनंद उमंग के तरङ्ग में हिलोरैं लेत औचक ही धाय बलबीर को पछार्यो है। सीताराम विकल बिहाल से भये हैं कोऊ मंत्र० ॥१॥

लाला मङ्गलदास जी कसबे पैंतेपुर जिला सीतापुर।

आनन द्विजेन्द्र तापै श्यामता विभास भयो चखअरविन्द नख दोष धो निहार्यो है। छूटि गिरी बंसी पिचकारी इक ओर गिरी मुकुट मयूर भो तिरीछो न सम्हार्यो है ॥ कौन खेलै फाग राग रंग को विवेक करै तौर धौं अमोघ प्यारी ताकि के पवार्यो है। चित्र पुत्रि रूप ठाढे मङ्गल निहारी भौन मंत्र० ॥

बाजत मृदंग डफ परम उमंग चित्त लाजत अनङ्ग रूप मोहनी सँवार्यो है। फाग की उमंग संग ग्वाल बाल लाल रंग उड़त गुलाल नभ लाल रंग धार्यो है ॥ प्यारी पै

गुलाल छोड़ो कहो हाँहाँ हाँहाँ लाल भान्यो नाहि मङ्गल जू वहुरि पवाच्यो है॥ भूलि गये राग रङ्ग अङ्ग कुम्हिलाय गयो मंत्र० ॥ १ ॥

जिला सीतापूर मौजे जैपारपुर बाबू अनिरुद्धसिंह जी।

शोभित समाज होली तट में वहारदार जूह प्रति खेल एक एकन सचायो है। पिचकारी रंग भरी चलैं भरि जोर भली कुंकुमादि उड़ैं मोद अति उदगायो है॥ अनिरुद्ध विविधि प्रकार के सु वजै बाजे तामें तुम चातुरी की चरचा प्रचायो है। जानि मैं गई थी तवै वश करै हेत राधे मन्त्र० ॥

जिला दरभङ्गा निवासी बाबू श्रीविश्वनाथ झा।

सीखी दै जतन मन्त्र वसि करिवे को कान्ह लोक कुलकान वीर सकल बिसायो है। आज वरसाने में रंगीली फाग की थी धूम कीनी मैं प्रयोग भली औसर विचायो है॥ मेरी करतूत मोही उलट लगी री हाय विश्वनाथ प्यारो वड़ो भारी होन हायो है। विवस गई

ह्वै मुखचन्द मुसकौंहै लखि मंत्र० ॥ १ ॥

मिर्जापुर गोस्वामी माधोगिर स्कूल ग्रामपुर।

डाख्यो है अबीर कै असीर प्रेम फन्द कियो कैसो खेल खेलिवो नवेली उर धारयो है। धाख्यो है न धीर वीर श्याम नेकु तादिन ते जा दिन ते फगुआ मचाइ रंग माख्यो है॥ माख्यो है सु मूढ मनो मंद मुसकाय प्यारी नैनहू नचाय भूरि भाव ते निहाख्यो है। हाख्यो है री हाथ मे तिहारे मन हाथन ते मंत्र पढि लाल पै० ॥ १ ॥

प० महावीरप्रसाद शर्मा वैद्य कोट जिला मिरजापुर।

सुंदरि सरूपवारी वारी वृजनारी वीर सारी गूढदर्शी कछू आगम विचाच्यो है। छाजत छबीली चटकीली रतिहू ते घनी ताही ठाम आई जहाँ राजे प्रानप्याच्यो है॥ फाग के वहाने चित आने चातुरी की चाल करि छल छंद सों प्रपंच अनुसाच्यो है। लीन्ही विलमाय ख्याल पल में गोपालवाल मंत्र० ॥१॥

मु॰ सूर्यनारायनलाल वकील सर्कार कोट जिला मिर्जापुर

पाग लागे गुच्छे हैं गुलाब श्रीगोविन्द जू के तंत्र रीति मानो वसीकरन सुधारयो है। पीले खौर तिलक अरुन युग भौंह बीच सो जगाइ जंत्र जनु मोहनी सँवारयो है॥ लाग्यो तिय ऊपर ना उलटि उन्ही के आगे ललित उपरना पै छिटकी सो पारयो है। ललिता ललकि ललकारि बलिहारी इति मत्र० ॥१॥

श्री जगन्नीलालकवि कसबे पैंतेपुर।

रङ्ग भरी सिगरी सयानी बरसाने रग रागनि उमगि फाग सुदर सँवारयो है। चोप भरे जंगली लला जू तिहि काल निज गोल तें निकसि टोल बालन पधारयो है॥ छीनि एक सों चट कनक पिचकारी करि चेटक सों छरकि छबीली रंग मारयो है। भूलो चपलापन कटाक्ष कोरही को बाल मत्र० ॥

हनिमन्त कवि

वेई वृजचद जापें वारिये अनेक रग या

बसंत वासर में विरह पधारयो है। कवि ह-
निवंत हाय हायल रहत यामें तव ते अनेक
जंत्र तंत्र करि हारयो है ॥ मदन महाउत
उतंग अंग औरै ढंग बन बाग राग तान
गान ललकारयो है। ये अलि विलोकि बृज-
बाल की अनोखी हाल सत्र० ॥ १ ॥

विश्वचँव पण्डा भगवानदत्त दूबे कवि।

बाग के बगर अनुराग भरी खेली फाग
धमक धमारि धूम धूँधर बगारयो है। ल-
पकि झपकि के झमकि झुकि झूमि झूमि
घूमि घूमि रंग के उमंग अंग धार्यो है ॥
भगवान बूझे सौंह खाती अनखाती ताती
काहे नैन राती करि दृगन पसारयो है। होहूं
देखि छकित विचित्र वा चरित्र वीर सत्र० ॥
ऊधम करनहार छैल छरकीलो छेकि छो-
करी कहूं की मा अनङ्ग रङ्ग धार्यो है। घोरि
बोरि केशरि अबीर मलि गालन में हालन
में ख्याल चोप चौगुनी बगार्यो है ॥ भग-

घान भोरी करि डारी मति गोरिन की थोरी वैस वारी हांरी प्रभुता पसाऱ्यो है। निकरि सु गोल तें दवारि दावि मूठि तानि मंत्र० ॥

गयानिवासी प० गिरधारीलाल जी शर्मा।

ऊधम धमार जानि धधाकि के धायो इतै मेरी ओर आय ख्याल औरई विचाऱ्यो है। लै लेतो इज्जत हमारी वह कारो दई नि-पट अनारी गेंद तानि तानि माऱ्यो है॥ गिरधारी कहिवे सुनै की है कहानी कौन तैहू दूर हुती हाल तेरोऊ निहाऱ्यो है। वची तवई मैं जव फेट गाहि फुरती से मंत्र० ॥

श्री०ठा० महेश्वरवक्षसिंहजी तालुकेदार रामपुर मथुरा।

कंज कुम्हिलाने खज कानन पराने जात मीन वारि वूड़े से हरिन हेरि हाऱ्यो है। झ-लक हँसीली दंत पलक नसीले नैन अलक कशीली व्याली विष सों वगाऱ्यो है॥ ल-कुट मकुट कहीं वासुरी विसारि दीन्हो पीत पट पांवरी महेश्वर सिहाऱ्यो है। ठौरही ठगे से रहे तरुनी तिरीछे ताकि मंत्र० ॥ १ ॥

दूसरी समस्यापूर्त्ती।

घूंघर गुलाल की।

बाबू रामकृष्णवर्म्मा संपादक भारतजीवन काशी।

प्यारे बलबीर आज तरनितनूजा तीर
फाग खेत आये भीर लीन्हे सङ्ग ग्वाल की।
त्योंही वृषभान की किशोरी मन होरी ठानि
झोरी लै अबीर गोल बाँधी बृजबाल की॥
देखते ललकि जुग धाये भरिगे उमंग भेंटन
के हेत था अनूठी बलि चाल की। दोऊ
परबीन मनभाई करिबे के हेत छाई नभ
माहिं लाल घूघर गुलाल की॥ १॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी।

आज बरसाने मे मचायो फाग बंसीधर
सङ्ग लै उमङ्ग सो हठीली गोल ग्वाल की।
बेनी द्विज लखते लड़ैती वृषसूरज की दौरी
साथ सखियां सजीली लै मोहाल की॥
लागी होन होरी बरजोरी दुहुँ ओरिन ते ब-
नैत बनै ना छवि राधिका गोपाल की। उन

बरसाय रङ्ग सरिता बहाय दीन्ही इनहूं म-
चाय दीन्ही धूंधर गुलाल की ॥ १ ॥

काशी निवासी पण्डित केदारनाथ जी।

आजु नंदलाल ते डरो ना कोऊ काहू भाँति मार पिचुकारी ते बचावो दृग ख्याल की ॥ छीनि लीजे हाथनि ते डफ ललकारि धाय कीजे नाहिं संक हुरहारन के जाल की ॥ होरी के खिलैया बलदाऊ जू के भैया ताहि कीट सिर पारि बेनी बाँधि दीजै भाल की। छीनि कै पितवर उढ़ावो ओढनी केदार गहो गिरधारी धसि धूधर गुलाल की ॥ १ ॥

छबील कवि – बनारस।

कीरति-कुँवरि बरसाने की गुमानभरी आई गोल विरचि बराबर के बाल की। सु कवि छवीले इतै गोकुल के ग्वालन गोपाल साजि धाये छवि दम्पति रसाल की ॥ देखि देखि देव नभमडल ते फूल झरै आज होरी खेलत जुगल नवचाल की। गमक गवैयन

की धूमधा म्रिदंगन की धमक धमार सु की धूँधर गुलाल की ॥ १ ॥

काशीनिवासी हलचद जी बल्लभीय।

सौरह सहस निज जूथ लै कुमारिकारी आई जहाँ ठाढ़ी रंगमंडली गोपाल की। महापद्म पद्म कच्छ मकर मुकुंद आदि वारि श्रीमुकुंद पर कीरति रसाल की॥ अति अनुराग रंग वरसन लागी फेरि लागी तहाँ चातुरी न कोऊ ग्वाल वाल की। नागर नवल रिझवार को रिझाइ धाइ करी मनभाई छाई धूँधर० ॥ १ ॥

जिला बनारस सरायमोहन निवासी मुकुन्दलाल जी।

साजि कै धमार नटनागर मुकुन्दलाल चले वरसाने संग लिये भीर ग्वाल की। कीरतिकिशोरी उत फाग की वहार करि खेलन पधारी जुत्थ जोरि बृजवाल की॥ मन अभिलाख लाख हाँकि होरी होन लागी को कवि वखाने वलि सोभा तेहि काल की॥

रंगन ते लालमई भूमि, बीच कीच भई
दसो दिस छाइ रही धूंधर० ॥ १ ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल की।

रङ्ग पिचका के वीर नीर के समान झरैं
बाजन मृदग चग धुनि घनमाल की। झाँझ
बजैं सोई मनो झिल्ली झनकार करें जुगनू
सी जोति होत बुक्का के उछाल की॥ दमकि रही
है घनस्याम घनस्याम पाहिं दुति दामिनी
सी राधा अगन रसाल की। बरखा बहार
आज होरी में सुसील देखु धूम धुरवा की
भाँति धूंधर० ॥ १ ॥

कीरति-किसोरी इतै संग में सहेलिन के
जोरि उतै मण्डली गुपाल ग्वाल बाल की।
डारत हैं रंग दोऊ दोऊ पै उमंगभरे कहा
कहौं वीर सोभा कुंकुमा उछाल की॥ देखते
बनै है छवि चलिकै सुसील देखु याही तो
समैया अहै आनँद विसाल की। भूपन पर

न धूरि भूरि रंगन की कीच भई। अवनि अकास छाई धूधर० ॥ १ ॥

कोपागजनि० सा मारकण्डेलालजी उपनाम चिरजीवकवि।

बाजत मृदङ्ग झाँझ डफ औ तमूरे रूरे गावत उमंग भरी जूहैं ग्वाल बाल की। उड़त अबीर औ कबीर हू सुनाई देत गृह गृह गाँव गाँव सुखमा रसाल की ॥ ब्रज की चलावे कौन कवि चिरजीव भाषै सारे जग माहिं आज सोभा लालोलाल की। महि ते अकाश लौं करोरों बने भूधर से जहाँ देखो तहाँ दीसै धूधर० ॥ १ ॥

रंग भयो रोग पिचुकारी दुख भारी भई सरस सुगंध भयो सामा उर साल की। गानं भयो गजब सु बाजन बलाय भयो खेल भयो सेल्ह और होरी कला काल की ॥ बिना प्रानप्यारे के सु कवि चिरजीव भाषै भोडर कनायें भई कनिका जवाल की। पीर देन

लागीं ये अबीर की उड़ानि बीर धीरज छो-
ड़ावै लग्यो धूंधर० ॥ १ ॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूंदी ।

आवत हैं तेरे धाम होरी खेलिबे को स्याम
लीने सग चारयो ओर पंक्ति ग्वाल बाल की।
उड़त अबीर औ मची है कीच केसर की
आवत अवाज वाद्य गावन धमाल की ॥
चंदकला प्यारी तू बिसारि सुधि बैठी कहा
वेगि साजि सौंज सबै फगुवा बिसाल की ।
आयगे समीप चलि सनमुख दौरि देखि
छाई आसमान माहि धूंधर० ॥ १ ॥

पयोध्यानिवासी कविराज लछिराम जी ।

बीना बेन बाँसुरी सितार त्यों सितारबीन
सॉरगी सिगार सुर सीमा करताल की। के-
सरि कपूर चारु चदन गुलाब नीर अतर
अरगजा लै नहरै बिसाल की ॥ लछिराम
जुगलकिसोर श्याम घन विज्जु बनक म-
यूर गति गोपी ग्वाल बाल की। कारी पीरी

घटा व्रज देस बरसत मानो नौरँग तरंग पर धूंधर गुलाल की ॥ १ ॥

रेला रेल रंग त्यों अबीरन की झेलाझेल मेलामेल केशरि तरंगन के ख्याल की । लछिराम धूम धाम गमक मृदंगन की संगमी झमक झोकैं करतल ताल की। दम्पति की फागु अनुरागन सलज सौंहैं झनकार बनक सहेलिन के जाल की। अरुन घटा लों बरसाने की वगर कैसी धमक धमारि पर धूं०॥

लखनऊनिवासी लाला हनुमानप्रसाद जी ।

आजु स्यामा स्याम फागु रच्यो मच्यो रग राग बाजे करताल डफ भीर गोपी ग्वाल की। नाचैं जुरे चाँचर मैं चले पिचकारी चहूं मार कुमकुम अविरन भर ताल की ॥ हनूमान देवदार देखें नोखी सोभा व्रज फागु मागैं गोपी गहे फेट नंदलाल की। धूम धुधुकीन की धमारन की धधकन धाई अधउरध लों धूधर० ॥ १ ॥

श्रीगोस्वामी किशोरीलाल जी धारा ।

पूरित पयोद पिचकारी लगै कारी, हेलि-
हनत हिये में जब प्यारी गोप ग्वाल की ।
केशर कुसुभ रग धारनि धरातल में बरसि
विराजै चपलासी हंस चाल की ॥ डपट द-
रेर डफ गरजि जतावै जोर तरल तरग सोण
कैसी घनी घाल की । ग्वाल नंदलाल की
चली ना नेक चाल देखि धमक धमार धूम
धूधर गुलाल की ॥ १ ॥

अजमेरनिवासी किशोरीलाल जी रावत ।

रस बरसाने बरसाने बनितान बनि भीर
अनुराग बात ठानी फाग ख्याल की। परत
अबीर चारु चिलकत चीर जुरी द्वार वृषभा-
नुजा के भीर ग्वाल बाल की ॥ बजत मृदंग
झांझ गावत धमारवर मधुर किशोरी धुनि
होत डफ ताल की । देत न दिखाई कछु
ऊपै उड़ि छाई नभ लाल लाल भूधर सी
धूधर गुलाल की ॥ १॥

दासापुर बलदेवनगर द्विज बलदेव कवि।

निरखि निहाल करि आँगुरी गड़ाय गाल
छीनि लीन्ही बाँसुरी विहँसि नंदलाल की।
बाजने बिजै के बजवायो व्रषभानसुता बलदेव
चारुता चखन चुभी चाल की ॥ चमकैं चहूँ-
घा चारु मदन मयंक मुख छनदा सी छावे ल-
गी छवि जागि जाल की। सखिया सयानी सग
घट कै कनक रंग घालिकै धमारि धरि धूँ० ॥

दासापुरनिवासी द्विजगग कवि।

आये ग्वाल बालन लै साँवरे उतै सौं इतै
आई अलबेली साज सारी रत्नजाल की। चारौ
ओर चमकैं चपल चित्त चोप चढी मानो चन्द-
वृन्द चचला हैं चारु चाल की ॥ द्विजगग ता-
कि के तिरीछे त्योर तीर तानि मार्यो प्रान-
प्यारी पिचकारी मुदमाल की। दीन्हो छाप
छरकि छटान में छबीलेलाल बाल के वदन धूम०

पटनानिवासी प० गोवर्द्धननाथपाठकउपनाम मग कवि।

आजु ब्रजबीच सखी देखे किन केल फाग

एकओर सखा जूथ येके व्रजवाल की। गावत धमार डफ गोमुख वजाय वीन बाँसुरी मृदंग चंग जोर धुनि ताल की॥ रंग वारिधार पिच-कारी की चलत मार इतहि ते सुप्यारी की उत ते गुपाल की। कविनग सूरनभ नेक हूँ दिखात नाहि ऐसी लै उँडाइ करी धुँधर० ॥

दरभङ्गा शिवप्रसाद जी कविवर के पुत्र देवीशरनजी कवि।

लंका में निसंका वीर वका केसरीकिसोर फागु रची मानो रामचंद जयकार की। वीरन के तन तें न रुधिर फुहारे चलें मानो पिचकारी लाल रंगन वहार की॥ देवी कवि दैवी वीर धर ललकार कीन धूम धाम मानो मची धमक धमार की। धधकें धनजय की धधरिन चारो-ओर अंधाधुध फैली मनो धूँधर गुलाल०॥१॥

दरभङ्गा प शिवप्रसादजी कविश्वरके शिष्य हरिदास कवि।

आज वनमाली सग ग्वाल लिये ताली देत प्यारी प्यारी करत डिठाई वृजबाल की। धाय धाय मारे पीचकारी रग भारी भारी यारी यारी

नजर निहारत निहाल की॥ सारी सुकुमारी नारी गारी देत न्यारी न्यारी हारी हारी करत पुकारी गोप जाल की। कवि हरिलाल आली छाई सुखदाई गन गोकुल की गली गली धूँ०॥

जौनपूर निवासी पण्डित सीताराम जी शर्मा।

माची आज होरी की बहार ब्रजमडल में उठत धमार पै मृदंग डफ ताल की। उतै, वृषभान की किशोरी लिये गोरी इतै ग्वालन की मण्डली जुरी है नन्दलाल की,॥ ह्वै रही चलाचली चहूँघा पिचकारिन की गोपिन को ग्वाल गोपी ग्वालहिं निहाल की। सीताराम चारो ओर सरस सुगंधसनी मद मंद छाय रही धूंधर० ॥ १ ॥

लाला मङ्गलदास जी कसबे पैंतेपुर, जिला सीतापुर।

गोपिन की सारी जरतारी लाल लाल भई लाल भई आभा मोर मुकुट बिसाल की। बाजे भये लाल लाल आनन गोपाल ग्वाल गोपिकाति चंद्र भा ते लाल के मिसाल की॥

व्योम भूमि लाल रंग छाइ रहो दशो ओर
लालही लखाइ परे शोभा मुक्त माल की।
भाखे दास मङ्गल जू प्यारी प्यारे फाग जानि
ऐसी करि दीन्ही देखो धूंधर० ॥ १ ॥

जिला सोलापुर मौजे जेपारपुर बाबू अनिरुद्धसिंह जी।

कालिंदी के तट महि होरी के निकट
इमि छाई अरुणाई मनो फरस प्रवाल की ॥
तामें सब विहँसि विहँसि केलि करि रहे
कहे नहिं बनत है छबि वहि हाल की ॥
साथ मेरे चले तो दिखाय लाऊँ अनिरुद्ध
जीवन को लाभ लेवै लखे लिखे भाल की।
वृषभानुलली नँदलाल पगे रंगन में दुहुन
समाज मध्य धूंधर० ॥ १ ॥

जिला दरभङ्गा निवासी बाबू श्रीविश्वनाथ झा।

काहे सोचती है अरी कर पै कपोल दीने
बात सुन मेरी तज चिन्ता दुख जाल की।
खेलन धमार नन्दलाल सजि धाय रचै
प्यारी जू अलीन जुत्थ आई जोऊ काल की॥

तूहू चल तूहू चल आई हूँ वुलावे वीर पूरी कर कामना लगी जो वहु साल की। अङ्क भरि लेरी विश्वनाथ मुख चूमि आज वंसी-वट तट धूरि धूधर० ॥ १॥

मिजाधिर गोस्वामी माधोगिर स्कूल ग्रामपुर।

अति छवि देत एक ओर भीर ग्वालन की एक ओर ठाढी हे जमाति जुरी वाल की। वाजे डफ ढोल औ मृदङ्ग वीन चङ्ग सग धूम मची फाग की न चूकै गति ताल की। उडत गुलाल वृज लोग सव लाल भये लाल भे लता वो वृक्ष लाले रथ पालकी ॥ महल मकान आसमानहूँ मे जानि परै चहूँ ओर जोर छाई धूंधर० ॥ १ ॥

प० महावीरप्रसाद शर्मा वैद्य कोठ जिला मिरजापुर।

नागर नवेली अलवेली वृषभानजा जू संयुत सहेली चली मत्त गज चाल की। उतै ग्वाल वाल सखा सग में धमार लीन्हे आवैं प्रेम छाके छैल गावैं गति ताल की ॥ होत

घगमेल माच्यौ फाग सानुराग बीर दौड़ि दौड़ि आली गहैं फेट नदलाल की। गोरी मुख रोरी मलैं भोरिन्ह अबीर भोकैं सारे ब्रज भूमि छाई घूधर० ॥ १ ॥

मु: सूर्य्यनारायनलाल वकील सर्कार कोठ जिला मिर्जापुर

ललो जू चली है अली सोलह सहस लै कै पाँचई हजार लै जमी जमाति लाल की। बीरनि अबीरनि चलाइ सतबीरनि सों रँगी तसबीरनि सों गति घाला बाल की ॥ अवनि अकाश रग अरुन अरु न दिस्यो लाल भयो सूर्य गावैं कीरति गुपाल की। श्याम घन घूँघुरु पुकार ते पंकारि जात ओर छोर छाई धरा घूधर० ॥ १ ॥

श्री जगदीशलालकवि कायथे पैसेपुर।

होरी खेलिवे को चलि आईं ब्रज गोरी सङ्ग कीरति किशोरी छवि छीनति मराल की। लीने कर भोरी रोरी केसरि कमोरी लाल सोहै साथ जङ्गली समाज ग्वाल बाल की ॥

होतही जुराजुरी अबीर मूठि छूटैं लगीं लूटैं लगी मोटैं चहुँ कोद मोद माल की। हेरि रङ्ग ख्यालन निहाल मन होत ऐसी लालन मचाई धूम धूधर० ॥ १ ॥

खेलैं फाग आज ब्रजराज ब्रजमण्डल में राजे धूम रागन मृदग बीन ताल की। गावत धमारे पिचकारे रंग ढारे कुंकुमानि कुच मारैं करैं कीरति कमाल की ॥ मीडि मुख जङ्गली अबीर चीरि चोली चीर एकै लेत छरकि सुधाई गरि गाल की। लाल लतिकान भ्रम गहत तमाल बाल वगरी बिसाल ऐसी धूँधर० ॥ १ ॥

सतप्रसाद जी सिकन्दरपुर कुर्था जिला गया।

आजु चलु देखौ सखी कालिन्दी-तटान पहँ नन्दलाल संग जहँ भीर ग्वाल बाल की। धारे हैं अनेक रंग सारी सखियान सब, मारें पिचकारी भरि ओर नन्दलाल

की ॥ कोई राग गावैं कोई नैन सर मारैं
कोई अबिर उड़ावै गावै जस बृजपाल
की । सत कहै सूझै नाहि सूर्य्य को प्रकाश
तहाँ, छाई मेघमाल नाई धूधर० ॥ १ ॥

रीवानिवासी कविवर नरहरिवंशीय ब्रजेश कवि ।

कर ते लकुट लीन्हो मौलि ते मकुट
छीनि गर ते बृजेश लर बर बनमाल की ।
मारि पिचकारिन धमारि धुनि गारिन दै
वारि दीन्ह्यो मञ्जु लता मदन मसाल की ॥
चलत न छल छंद नंदगाउ ग्वालन की
अवलोकि ऊधम अनद आल वाल की
जालसों पकरि के हूँ बीच बृजबालन के
लाल पै कराति घाल धूधर० ॥ १ ॥

विध्यर्द्धवपण्डा श्रीभगवानदत्त दूबे कवि ।

आवो साजि गोरी भोरी नवल किशोरी
सबै सांवरे के संग फागु रचौं इह चाल
की । लकुट मुकुट कटि काछनी सु पीतपट

छीनि लेहों लपकि लपेटि वनमाल की ॥ भगवान घोरि बोरि केशरि सु वर जोरि अबिर लगाइ राखों सुखमा विशाल की। भाल की मरोरन चलेगो लाल गाल कीने उधुम मचाइ डारों धूधर० ॥ १ ॥

आवे जुरि ग्वाल करैं भयो मन ख्याल हाल दै दै डफ ताल औ बजावे बहु गाल की। घोरि कर केसरि सु बोरि पिचकारिन में अबिर उड़ाइ गारी गावें बहु चाल की ॥ भगवान की सौ आन मोहि वृषभान जू की नेक ना डरोंगी भौंहि मोरनि गोपाल की। अधा धुन्ध धूम धाम धूरि सो छपाइ छैल उधम मचाइ डारो धूंधर० ॥ २ ॥

गयानिवासी प गिरधारीलाल जी शर्मा।

उडि गये धीरज पखेरू गिरधारी वीर चिंता धूम छाई है विशाल ज्वाल माल की। प्रान मृग चंचल ह्वै अनत चलन चाहे पाय जलबिंदु सी न पतियां गुपाल

की ॥ विरही वदना रयय दहि जेहैं लगे अब लू बन लहर तान फागुन कराल की। उफ ध्वनि प्रबल प्रभंजन झकोर सग प्रगटो ये दावानल धूधर० ॥ १ ॥

कविराज लछिराम जी के शिष्य हनिमन्त कवि

मोद भरे खेलत वसत सग स्यामा स्याम अंतर लपेटी फेटी अंग नव-बाल की। कवि हनिमन्त कत कामनटनागर पै मारी पिचुकारी न सँभारी उर माल की ॥ दोऊ छकि रहे रस रंग में अनङ्ग जू के अतिहीं हुलास आस पुरी भरि भाल की। ऊधम धमारि में कुमारि सुकुमारि आजु रङ्ग भरी भूमि धूम धूँधर ॥ १ ॥

श्री-ठा० महेश्वरबक्शसिंहजी तालुकेदार रामपुर मथुरा।

राजत रसिक रौन रूरे रंग मदिर में जागे जहाँ जगमग जोति रत्नजाल की। आई प्राणप्यारी दामिनी सी दुरि दोऊ तित माधुरी हँसनि मतवाली मुदमाल की॥ हेरि

के महेश्वर परम अनुराग भरो चारु चारु-ताई तै चमक चोप चाल की। एक को छिपायो छलिया ने छतिया के तरे एकन पै कीन्ही धाय घूँघर० ॥ १ ॥



सूचना।

समस्त कविजन से सविनय प्रार्थना है कि कविता के तुकान्त में तथा वीच में भी स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग का विशेष ध्यान रक्खें। ऐसा न करने से वह कविता भोंड़ी और अशुद्ध होती है। उक्ति भी जहां तक हो अच्छी होनी चाहिये।

रामकृष्णवर्म्मा
सेक्रेटरी

श्री गोकुलेशो जयति।

कविमण्डल

की

समस्यापूर्त्ति

मिती फाल्गुण सु० ८ वार गुरु सं० १६५३

पन्द्रहवां अधिवेशन

सराहौं तव तोकों में।

बाबू रामकृष्णवर्म्मा सम्पादक भारतजीवन काशी।

भावै जौन मन में करौ सो तुम स्यानी अहौ मोहि कहा परी तोहिं बार बार रोको में। जैसी कमनीय कोटि रति सी तू राजै तैसी कान्हर में कोटि काम सुखमा बिलोको मे॥ बैठी रहो कुल को गुमान हिये ठानि तोहिं बावरी बुझाऊँ समझाऊँ सो कहो को में। धीर बलबीर देखि धीरज सँभारै जब जग में पतिव्रता सराहौं तव तोको मैं॥१॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी।

आये जौन जोम ते इहाँ हौं फाग खेलन को लालन तिहारो जोम सोतो ना विलोको मैं। बेनी द्विज भरि के कमोरिन उछाल्यो रंग अङ्गन अँगेज के अकेली वार रोको मैं॥ अब क्यों पिछौहें पाय हटि के चले हो भाजि हनन लगी हैं जो अदा सो नैन नोको मैं। ग्वालन की ओट ते चलावत कहा हो चोट सौंहें आव साँवरे सराहों० ॥ १ ॥

अपर

एरे घननाद मोहि जानत नहीं तू दुष्ट बेधिहौं सरीर तेरो तीखे बान नोको मैं। बेनीद्विज बल के हरायो जो पुरन्दर को आजु सो तिहारे वाहि बल को विलोको मैं॥ लखन सरीख ललकार देन वार वार वार तो तिहारे को हजार वार रोको मैं। दुरि दुरि करत कहा है युद्ध मोसों सठ सौंहें आव सुभट सराहों तव० ॥ १ ॥

काशीनिवासी हरुचट जी बकाँय ।

जूथ निज मुख्य साजि प्रथमहिं वेगि जाइ नन्दग्राम गैल गैल रङ्गनि सों रोको मैं। कौतुकी अनूप स्याम रसिक सुजानराय तिनकी ढिठाई कछु जौलों अवलोको मैं ॥ बरसत निद्धि तौलों आवै तू सखिन संग मोहे मरजाद मति नैनन विलोको मैं । आज फाग केलि मैं करे जो करामाति कोऊ एरी तपसालिनी सराहों० ॥ १ ॥

जिला बनारस मरायमोहन निवासी मुकुन्दलाल की ।

फाग खेलिवे को है घमरड लाल ग्वालन के चंचल सुभाव चटकाहट विलोको मैं । छल करि आवत चुराइ पिचुकारी पट रंग मारि भाजत कहाँ लौं रिसि रोको मैं ॥ याहि मन आवै गहि पावों जो मुकुन्दलाल भौंडर गुलाल भोरी एक संग झोको मैं । कीरति किसोरी कान लागि ललिता सो कही कौनौ घात गहु री सराहों० ॥ १ ॥

माझानिवासी श्रीलाल श्यामगिपेन्द्रशाही जी।

चंचल चपल वायुहू ते वेग तेरो मन परम प्रचंड अब कहाँ लगि रोको मैं । चक्षु श्रोत जिह्वा घ्राण चर्म सह पाँचन को स्वाद गन्ध रूप प्रिय पर्स देइ पोखो मैं ॥ होत नहिं तृप्त तऊ भोगही को चाहै सदा स्याम भनै ज्ञान के गदा ते तोहि ठोको मैं । गुरु उपदेस सुनि सन्तन सभा में बैठि सेवक कहाउ तैं सराहों० ॥ १ ॥

पटनानिवासी बाबू पन्नलाल जी।

तू जो समुझावै भाँति भाँतिन बुझावै मोहि रोवै जिन प्यारी आँसु कौन भाँति रोको मैं। कहा जानि बूझि के सुसील सखी आप लई आपनेई गातन बिरह आग झोंको मैं ॥जब ते निहारयो मनमोहन अनूप रूप और की भई हौं और आपही बिलोको मैं। काहू भाँति लाय जो मिलाय छिनहूँ दै सकै आपनी बखानौं औ सराहों० ॥ १ ॥

कबहूँ रहेगी नाहिं पत या पतिव्रत की साहस समेत पुनि पुनि ताल ठोको मैं। लाखन कुलीनिन सुसीलिन की आँखिन सों बाहर कढ़ात दसा नित अवलोको मैं ॥ जैहैं छिनहीं में मन आपनो परानो होय उरझि सु रूप जाल बिधि नैन नोको मैं ॥ लखि प्रतिमा हों यह मोहन सुसील जू की प्रतिमा न होय जो सराहों० ॥ १ ॥

पद्य

आवै कढ़ि सामुहें जो साहसी हिये की अहें पिचका चलावै कौन भाँति अवलोको मैं॥ काहे ना लगावै है गुलाल नंदलाल गाल दुरि दुरि जाय रहे सखियान थोको मैं ॥ होरी की खिलार जो तू सत्यही सुसील प्यारी चाहिये रुकै ना यों सकोच लाज रोको मैं। स्याम जू के पाछें जिती बातन बनावै तासु चौथहू दिखावै जो सराहों० ॥ ३ ॥

कोपागजनि॰ना'भारकहेलालजी, उपनामे चिरजीवकवि।

कहा होत धाम छोड़े कहा होत गाम छोडे
कहा होत बाम छोड़े जाको सदा सोको मैं।
मन ते बिसारै विषै देह ते सम्हारै काज
चित ते विचारै ईस सावसी दूं वोको मैं॥
चेलो सो वखानै गुरु कवि चिरजीव भाषै
तोको ये विरागी होत कैसे करि रोको मैं॥
होय कै गृहस्थ जो विराग उर धारै शुद्ध
येरे नर बावरे सराहों॰ ॥ १ ॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूंदी।

नीर लैन जाऊं मैं जवे री जमुना के तीर
हरि के निहारिवे को देवन को ढोको मैं।
काहू घोस भागन से मोहि मिलै जाय कहों
लागे दौरि नैन लवे नीठि नीठि रोको मैं॥
चंदकला बोलों ना चवायनि की चाल देखि
खोलों नाहि घूँघट धिकार देत मोको मैं।
काहू भाँति दाँव देखि करिकै भुलाव कोई
ल्यावै ह्याँ गुपाल कों सराहों॰ ॥ १ ॥

लखनऊनिवासी लाला हनुमानप्रसाद की ।

सदा सद छीर नीर यतन सों पान करु मुकुत अलेखे पैहै काकरीन रोको मैं । छाड़े सर संवुकी विवाद वक भेकन तें मान मानसर में भुलानो ताते टोको मै ॥ त्रिविध समीर अमरैया जहँ माधो बसैं देवन की मंडली कमडली विलोको मैं । हनूमान मन हंस ऐसे ठौर वसिवे की राखै अभिलाख जो सराहौं तव० ॥ १ ॥

श्रीगोस्वामी किशोरीलाल जी प्यारा ।

कोपि करीपाल व्यग घोल्यो व्रजराज जू सों तेरी कहा ? धीर लोकपालन कों रोको मैं । कालकल्प कुलिस कठोर करी कंस जू को विवुध विदारे अंकुशा जो नेक भोंको मैं ॥ सुंडादड फेंकि मारतंड गहि डारै दौरि दिग्गज पछाड़ै छूटि जो पै झूमि झोको मैं । घडे घडे वीरन की भाँति याहु मारे जय धीर वलवान में सराहौं० ॥ १ ॥

अपर

जात मथुरा कों तुम जात निरमोहिन, की
जाहु जू भलेहीं तुम्है जात के न टोको, मैं ।
मोहि के मिताई की सचाई जो दिखाई लाल
ताकी ये सफाई पै सवाई भाल ठोको मैं ॥
लीन्हो बरजोरी जो लटू कै मीत मेरो मन
ताके फेर देवे को सुजान तोहि रोको मैं ।
जाहु जो हिये तें रोम रोम नेन बैनन, तें
रीझि रोम रोम तें सराहो तव० ॥ १ ॥

अजमेरनिवासी किशोरीलाल जी रावत ।

सग ग्वाल बाल लै उडावत गुलाल रंग
अम्बर सुरंग नीको ढङ्ग अवलोको में । दुरि
दुरि दूरि दूरि दौरत उछाह भरे दाव परे इत
उत राह अत्र रोकों मैं ॥ दैहो फाँसि हाँस
ही के फाँस भट लैहो गहि नेकहु लगत
घात नैनन की नोको मैं । ओट ते मुरारि
कहा चोट पिचकारी करै सौंहैं आव तनक
सराहों तव० ॥ १ ॥

आदर बढ़ावै मान-चादर उढावै जस चादर चढ़ावै कविजनन बिलोको मैं। ऐसे ही भरोसे पर बाँधि बाँधि जोसे वर मोसे महा मूरख की व्याकुलता रोको मैं ॥ तोऊ ध्यान आवे जब धीरज नसावें सब नीर झर लावैं इन नैनन की नोको मैं। यातें बलबीर० वेगि हीय ते भुलाउँ हरिचंद प्रदमाकरे सराहों तव तोको मैं ॥ २ ॥

कानपुरनिवासी प० ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी ।

आये फाग खेलिबे को वीर बलबीर इतै बोरि रंग दोरि के अबीर भूरि झोको मैं। ललित लगाइ मुख रोरी बरजोरी करि गये काढि बढि के रुके न नेक रोको मैं ॥ कित धौं पराने नहिं जाने जात कैसी करौं देखि ना परति ग्वाल गोल अवलोको मैं। वनिता बनाइ के सहाइ लै के धाइ वेगि जाइ गहि लाऊँ री सराहों० ॥ १ ॥

० कवि बलबीर अर्थात् एक शब्द द्वयार्थ में है।

रीवां मऊगञ्ज मिश्र सेवकश्याम कवि जी।

बांधि अलि गोल प्यारी टेरि कही मोहन
सों खेलो खुलि फाग मनमानी नहि रोको मैं।
ठाढे कहा दूरही ते हेरत उमाहभरे झेलहु
अबीर झोरी झिलि तिमि झोको मैं॥ आज
श्यामसेवक जो काल सी ढिठाई करि अ-
तर लगावो वदि बीर पीठ ठोको मैं। मारि
पिचुकारी नेक डारि जा गुलाल मोपे आइ
इत सॉवरे सराहो० ॥ १ ॥

बाबू शिवमदनसहाय जी (लजी बांकीपुर)

करि लै अपानो बस नैन दिन रैन हाहा
एडिन लो घूघट को घालि कहा रोको मैं।
मारि लै गुमान तान हौलै कुलवान पर र-
हैगी न सान कवो तीन ताल ठोको मैं॥
कान बसी तान परे बावरी बने ना जो पै
विधि विनवै ना काहि विधि अवलोको मैं।
देखि रसखान जौं निवाहै कुलकान ऐसी
सिव की है आन री सराहों० ॥ १ ॥

दासापुर बलदेवनगर द्विज बलदेव कवि।

द्विज बलदेव.की बिनै को तौ विचारै बेगि बीर बावरी सी चन्द बदन बिलोको मैं।। प्रेम में अधीर फूले आवत ब्रजेन्द्र इत उत गोल ग्वालन के रोष करि रोको मैं ॥ धरि के धरा पै लाज काज को गयन्द-गति भापै तू हिये के हाल झखकेतु झोको मैं । हारि लै हिये की पीर भरि लै निसंक अंक करि ले मनोरथ सराहौं० ॥ १॥

श्री०ठा० महेश्वरबकससिंहजी तालुकेदार रामपुर मथुरा।

कंचनकलित पिचकारिन तरङ्ग रङ्ग झोरिन अबीर झारि झंपित कै झोको मैं। बाजने बिजै के बजवाय दे महेश्वर सौं विवस ब्रजेन्द्र श्रीविलोचन बिलोको मैं ॥ सखिन बधाई दै धरा पै धारि धन्य धुनि धुँधुरित धाक के धमारि धार रोको मैं । ग्वालन के गोल में गुलाल नदलाल गाल लाय दै री ललकि सराहौं ॥ १॥

दाबापुरनिवासी द्विजगग कवि।

मीन मृग कज खज चखन पै वारि डारों
द्विज गङ्ग चाल पै, गयन्द-गति रोको मैं।
प्रेम के प्रदेश बसि लाज को न लावै लेस
मनहि रमावै झाँपि झखकेतु झोंको मैं॥
हँसि हाव भावन सों चारु चित चावन सों
करि दे कलान ते कही जे केलि कोको मैं।
साँवरे सों सकुल सनेह साजि सैन करि
मारे नैन सर सो सराहों ॥ १ ॥

बाबू बिहारीसिंह उपनाम रघुराज कवि छपरा।

पैवंद लगाऊं आसमान मे कहत है री
सूखे नदी नाव को चलाऊं नाहि रोको मैं।
भनत बिहारी फिरि सात परदे मे जाय
निज गुन गौरव देखाय ताहि छोको मे॥
तेरी बुद्धि यारी देखि सारदा बिचारी झखै
सोहूं को गुमान सान याते ताहि टोको मे।
चंचल चतुर छरछायल छवीली बाल वाको
यादि लावों तू सराहों० ॥ १ ॥

पटनानिवासी प० गोवर्द्धननाथपाठकउपनाम नग कवि ।

जौ तू खेल होरी वाचि चतुर चलाक अहै
स्याम संग खेल नेक दृढता विलोकौं मैं ।
पंडित प्रवीन जिय मानत है आपुन को तोहू
सो प्रवीन प्रौढ सखा वाहि थोको मैं। कहाँ लौं
करैगी छल छंदन प्रबध बीर बिरथा बड़ाई
करै मैन-मद झोको मैं । भनै नग जाय ब-
लबीर के अबीर मुख माडि करि आवे हाँ
सराहौं तब० ॥ १ ॥

राज्यमानप शिवप्रसाद जी कवीश्वर के पुत्र देवीशरनजी कवि

बीर बिचले की पीर है न नेक मोको चलो
और जो भई तो भलो पायो यह मोको मैं।
फेरि उठि वैठिहैं न इनको हमारे सोच ल-
खन ललाहू भूमि परे अवलोको मैं ॥ बंदर
बिदित दसकंधर सों वार वार कहत प्रचारि
करों एक अरजो को मैं। वीरवर नीठि करि
तेरी मूठि सही पर मेरी मूठि सहैगो स-
राहौं तब० ॥ १ ॥

अपर

हारि जैहों जानकी जु रंच विचलावै फिरैं राघव प्रतिज्ञा करि आजु पग रोपो मैं। बल करि हारे इन्द्रजीत आदि वीर सबै बोलो तबै देखि दसकंधर प्रकोपो मैं ॥ मानत न संक है हमारी गढलङ्क हू मैं रंक बल अधिक निसंक अवलोको मैं। आवत उतल्लू चलि भागै मति मल्लु पग रोपही रहैगो जो सराहौं तब० ॥ १ ॥

जौनपूर निवासी पण्डित सीताराम जी शर्मा ।

वीर हुरिहारन की भीर मे अहीर बन्यौ आयो यदुवीर आज ताहि किन टोको मैं। घोरि लै गुलाब आब रंग पिचकारिन में जोरि लै सखीन की जमाति तब रोको मैं। धँसि कै धमारि के गवैयन भगावो मारि मिलि सब नारि अँखियानि अवलोको मैं। ग्वालन की गोल में गुलाल घोरि लालन के गालन लगाय दे सराहौं० ॥ १ ॥

श्रीमा॰कु॰ श्रीमान् लाल त्रिलोकीनाथसिंहजो भुवनेश ।

आज वृजराज पै रचोगी अनुराग फाग
जानि तोहि गुनवन्त तेरी पीठि ठोकों मैं।
मारि पिचकारिन सो करिहौं महान कीच
ताही बीच आय जैहो ज्योंही अवलोकों मैं।
भुवनेस धसियो धमारि की सु धूँधरि मैं
वीर बलवीर पै अबीर जब झोकों मैं। ग्वा-
लन के गोल तें गुपालै गहि लाय कै मिला-
वै बलि मोकों जो सराहों तब॰ ॥ ९ ॥

लाला मङ्गलदास जी कसबे पैंतेपुर जिला सीतापुर।

विषयी विलास में विमूढ़ लो प्रमत्तचित्त
एरे मन बार बार याते तोहि टोको मैं।
अंत यमराज के दुआर दण्ड पावै नीच सो
न सुधि तोकों हाय नित्यही विठोको मैं॥
छोड़ि जगजाल को पसार ध्याउ सीताराम
मङ्गल उवार को उपाय अवलोको मैं। चेतु
रे हमारी सीख मानि त्यागि दुष्ट भाव जानों
ज्ञानवान औ सराहों॰ ॥ १ ॥

जिला सीतापर मौजे जैपारपुर बाबू अनिरुद्धसिंह जी।

जाहि मिलिबे की अभिलाख केते द्योसन तें अब लों मिल्यो न बीते वासर हे सोको मैं। तासु हेत कहों तोसों अनिरुद्ध समुझाय नेह उमगात याको कौन विधि रोको मैं॥ करि कै उपाय कछु लावै वा सहेट तीर नैनन लो जब ब्रजराज अवलोको मैं। चातुर प्रवीन जानि हिय में सखीन मध्य धन्यवाद देकर सराहो० ॥ १ ॥

श्रीमती महारानी साहबा प्रतापगढ़ अवध।

सिय मुखचंद त्यागो दूजो चन्द मन्द कहाँ कौन गुण जानि समता मे अवलोको मैं। मुख अकलङ्की स कलङ्की तू प्रसिद्ध जग काहि समुझाऊँ किसे वाको जाय रोकों मैं॥ दिवा दुतिहीन घन समय मलीन खीन रामप्रिया जानै तोहि जन सब लोको मैं। लली मुख लालिमा गुलाल सों लखात जैसे तैसी दरसावो जू सराहों० ॥ १ ॥

बसन्तपुरनिवासी पं० यमुनाप्रसाद ओझा।

तजि गृहकाज लाज लौकिक सवैई ताजि
होत बदनामी नाथ कौने विधि रोको मैं।
जेते जग पापी व्है सेवक दुज देवन को
फिरत निहाल हाय खात फिरों झोकों मैं॥
केवट अजात गिद्ध गनिका अजामिल लौं
तारयो तिय गौतम त्यो आय द्वार रोको मैं।
सबै अपनायो खल केते अपनायो यमुना
को अपनावो जो सराहों० ॥ १ ॥

श्री जगमोहनलालकवि कसबे पैतेपुर।

जौ लगि इतै गँभीर भीर ग्वाल बालन मे
मजुल गुलाल लाल झोरी झेलि झोको मैं।
केशरि कलित पिचकारी धार वारन तें ज-
ङ्गली बिहारी की गलीन गेरि रोको मैं॥
तौ लगि उतै जो फाग खेलिबो तिहारो ख्यात
आज रंग मेलिबो सो राधिके बिलोको मैं।
आनन अबीर बलबीर मेलि आवै बीर कोरी
कढि आवै जो सराहों० ॥ १ ॥

श्रीगोवर्धननाथसिंह रतनपुरा छपरा।

ऐरे नर मूढ़ तू फस्यो है जग जाल माँह काल को न ख्याल यातें बार बार टोको मैं। गोवर्द्धन धन धाम धरनी न ऐहै काम वाम दाम संगी है विचारि करि रोको मैं ॥ कर सतसङ्ग हरिकथा वारता मे नेह सतपथ गामी होइ नाम कर लोको मैं। भाग वुरे कामन से छोड़ बदकार संग सुजन कहाव तू सराहौं० ॥ १ ॥

विध्यवंशपण्डा श्रीभगवानदत्त दूबे।

वकि लै री गारी तै विचारि गैल आपने को हम तो पराइ नारि कसे कर रोको मैं। डारि लै रे केशरि पवारि लै अबीग्न के मारि लै रे मुठी लै गुलाल काह टोको मैं॥ भगवान की सौं ऐहो वनि वरसाने माँह जानिहौं सपूत पूत सानदार नोको मैं। मारि मारि बाँसन विदारि डारि गातन को ऐहो वचि साँवरे सराहौं० ॥ १ ॥

देहौं धन लाखन वकसि छन माह ताहि देताहि रहौंगी न कदापि कर रोको मैं। जंत्रन ते मन्त्रन ते वसीकर तंत्रन ते आले उपचार की पसारता न टोको मैं ॥ भगवान गावो औ बजावो नाचो बहु वार छिन छल छाओ छरा छोहरि के झोको मैं। मान-मद माती माननी के ये मजेज मान मोचन कै सॉवरे सराहों तव० ॥ १ ॥

गयानिवासी पं गिरधारीलाल जी शर्मा।

बनद घनेरे घूमैं संग ना ननद सासु घोर चोर सोर सुनि कैसे धरि रोको मैं। गिरधारी तापै द्वार सामुहे लगाय राखे कदम रसाल रम्भा अमित असोको मैं॥ याते डर लागे जौं लौं आवै प्राणपति नाहि नित गुण गायहौं तिहारो अवलोको मैं। तौलौं मीत पाहरू हमारई डगर भरि रात पहरा दै जा सराहों० ॥ १ ॥

दूसरी समस्यापूर्त्ती।

लाल को नचाऊं मैं।

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी।

होहु ना अधीर भीर देखि कै अहीरन की धीर जो धरौ तो अबै सबही बचाऊँ मैं। बेनीद्विज छायकै गुलाल की गँभीर धुध गरब गुमानी गोल ग्वाल को लचाऊँ मैं॥ लाऊँ धरि धसिकै गोपाल मै धमारिन ते ऊधम अनेक चहुँओरन मचाऊं मैं। बेटी वृषभान की कहाऊँ ना कहूं जो आज बनिता बनाय नाहिं लाल को नचाऊँ मैं॥ १॥

काशी निवासी पण्डित केदारनाथ जी।

कालि की कहौं का दसा तरनितनूजा तीर आँचकही मोहन मिल्यो री सून ठाऊँ मैं। चीथि डारयौ कंचुकी विथोरि डारयौ हीर हार हारी करि बिनती कितेक परि पाऊँ मैं॥ कीन्ही मनभाई नहिं मान्यो री केदार ताको चूनरी चटक चारु ओढनी ओढ़ाऊँ

मैं। तोपै वृषभान की कुमारी हौं सही री वीर जोपै गाल गुलचा दै लाल को न० ॥१॥

काशीनिवासी बाबू माधवदासजी।

ग्वाल बाल सङ्ग लैके आयो है मचायो धूँम लाज भरी गारी देत कहाँ लौं बचाऊँ मैं। कालही सहेलिन की जोरि कै जमात आली होहो करि धाऊं लाल धूँधर मचाऊं मैं॥ तेरी सौंह माधव कोपकरि पछारूं आज तो मैं वृषभानु की जु सानहीं पचाऊं मैं। देखि लीजै ख्याल बाल हालही हमारो अब मलिके गुलाल गाल लाल को नचाऊं मैं ॥१॥

काशीनिवासी हलचद की बलभोथ।

मुख्य ब्रज अङ्गनानि माहि अग्नि की कुमारि राधिका सहचरी न जग मैं कहाऊं मैं। परम विरागनी ना नाम धरवाऊ नहि गोकुल के चन्द्रमा की पदरज पाऊं मैं॥ रावरी सपथ एहो स्वामिनी सुखद निज सुजस मयङ्क माहिं कालिमा लगाऊं मैं। करिकै

विमोहि सकल ग्वाल वाल ग्वाल-बालिका
बनाइ जो न लाल को नचाऊँ मैं ॥ १ ॥

जिला बनारस सरायमोहन निवासी मुकुन्दलाल जी ।

एहो राधा नागरी प्रसिद्ध गुन रूपवारी
कान्है गाहि ल्याऊँ तव ललिता कहाऊँ मैं।
पीतपट बाँसुरी मकुट बनमाल छोरि नख-
सिख रङ्ग बोरि होरी मैं छकाऊं मैं ॥ चोटी
करि ऑजि दृग भूषन ते भूषि तन चूनरी पि-
न्हाइ नई कामिनी बनाऊं मैं। घूंघट कढ़ाय कर
भावना बताय गति ताथई थई मुकुन्दलाल०॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी।

सत्य कै सुसील सखी तोहि कहि देती आज तौ
न वृषभान जू की तनया कहाऊ मैं । कीराति
नसाऊ कुल कीरतिकिसोरी नाम मुख बरसाने
नाहिं कबहूं दिखाऊ मैं ॥ जौ न भरि फागुन
के धूमन धमारन को बदलो चुकाऊं हीय क-
सक मिटाऊ मैं। बोरि बोरि रङ्गन सौं गालन
गुलाल मींजि लाख लाख नाच नन्दलाल०॥

छपर

सकल सुसील सखी साजहु समाज साज
समाचार आज अति सुन्दर सुनाऊ मैँ ।
मान को रह्यो जो वृषभान तनया को गर्भ
तामें प्रेम पुत्र भयो आनँद मनाऊ में ॥
पाग पायजामैं जामैं चीरे औ पटूके आदि
मोतिन की माल क्रीट कुडल लुटाऊ मैं ।
नथ पहिराइ माँग सेँदुर लगाइ सारी ओ-
ढ़नी सजाइ नाच लाल को नचाऊं मैं ॥२॥

सिहोर काठियावाड निवासी कविगोविन्दगोलाभाई ।

रङ्गको रचाइ अति कीच को मचाइ महा
गेल मैँ गुलाल केरि धुन्धर मचाऊं मैं । गो-
विन्द वा समे धाइ सखियाँ समेत पुनि कान्ह
को पकरि निज पौरिन में लाऊ मै ॥ चूनरी
उढ़ाइ सिर कंचुकी धराइ उर घाघरी पि-
न्हाइ दृग काजर लगाऊ मैं । राधिका क-
हत ऐसें औंसर कों पाऊं कबे घूघूरू बँधाइ
पाय लाल को नचाऊ मैं ॥ १ ॥

• नि० कवि० मा मारकण्डेलालजी उपनाम चिरजीव कवि।

नाक मे भयो है दम हम ब्रजवालन को
कहा लौं अपाने हिये क्रोध को पचाऊँ मैं।
निकलै न पावै कोऊ होरी मे हमारे ग्राम
जासो कहो तासो यह वात को सचाऊँ मैं॥
याही उर आवै कान्ह ऊधम पै चिरजीव
एकहू मुलाहिजो न नन्द को वचाऊँ मैं।
गरे विच डोरी डाल वन्दर कलन्दर लौं हा-
थन पै ताल दै दै लाल० ॥ १ ॥

पपर

यह हतभागिनी को चैन वही चर्नन
मैं जाको उर सेवै सभु तो ढिग वताऊँ मै।
यह घाम दु खिनी को सूरत हराम सारी
राम विनु भूतल मे तेरे को सुनाऊ में ॥
रावन सो जानकी कहत चिरजीव भावे
कोटिन कलेस हू पै और को न ध्याऊ मैं।
आपनो अनूप रूप माल वौचिवे को नहीं
द्वार द्वार या मन दलाल को नचाऊ मैं ॥२॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूंदी।

चालो वेग सकल समाज लेय फगुवो को गोकुल के ओकन में रंगहि रचाऊँ मैं । ऐ हैं वनमाली आली होरी खेलिबे के काज पकारि तहाँही तिन्हे खुब ललचाऊँ मैं ॥ चंद कला अंजन अँजाय भाल टीको लाय व-निता वनाय नाहिं मन में कचाऊँ मैं । आ-नन पै अमल गुलाल मलवाय आज गारी खाय वालन पै लाल को० ॥ १ ॥

लखनऊनिवासी लाला हनुमानप्रसाद जी।

फागुन को दिवस अदोस कोस आनँद के अदभुद रंग राग चाचर मचाऊं मैं । दोऊ दिसि हेलाहेली अबिर गुलाल धुंध स्यामै धरि लेऊं मान गोपन लचाऊं मैं ॥ हनूमान राधा कहै गोपिन सों हँसि हँसि मन में रच्यो है आजु प्रगट रचाऊं मैं । पूरव प-चाऊं रूप अवला सचाऊं लखो छाड़ों तव दे दै ताल लाल को० ॥ १ ॥

श्रीगोस्वामी किशोरीलाल जी धारा।

धीर रसराज आज आवत समाज साज
कैसे अङ्गराग फाग खेलि कै वचाऊं मैं।
जाऊं पिचकारिन धमारिन की गारिन में
लाऊं भरि धूम धुधुकीन की मचाऊं मैं ॥
नैन आँजि आँजन धराऊं चीर चोली चारु
माँग पूरि वाके भालवेंदी हू रचाऊँ मैं। क-
सक मिटावो चीर चोरी को किसोरी सवै
दै दै करतारी नाच लाल को० ॥ १ ॥

धपर।

कोऊ कहै धसि कै धमार धुधुकैयन में
छैल छलिया को अवै ह्याँई घेरि लाऊ मैं।
कोऊ कहै छीनि पटपीत वनमाल वेनु कस-
क हिये की मैन मसक मिटाऊं मैं ॥ कोऊ
कहै साँवरी वनाऊँ सखी साँवरे को माँग
भरि वेंदीभाल भूषन सजाऊ मैं। कोऊ कहै
ग्वालन के गालन गुलाल घाल ख्याल करि
आजु नंदलाल को० ॥ २ ॥

अजमेरनिवासी श्रीकिशोरीलाल जी रावत।

घालन गुलाल औ उड़ावन अबीर दे री लावन दे भीर वाको धीरज भजाऊं मैं। लै हों छीनि जोरी कै कमोरी झोरी वीर सवै अवै ही किशोरी वृषभान की कहाऊं मैं॥ पहराय घूमवारो घाँघरो सजाय अंग सुंदर सु आँगी वर अंगना वनाऊं मैं॥ रंग भरी चूनरी उढाय लाल नीको नाच बीच अङ्गना मे नन्दलाल को० ॥ १ ॥

कानपुरनिवासी प ललिताप्रसाद जी त्रिवेदी।

मारि पिचकारी दे दे तारी वलिहारी कहि संग बृजनारी भारी धूंधर मचाऊं मैं। ललित भुजान सों जकरि कै पकरि घेरि सव गोल ग्वालन को रग मैं रचाऊं मैं॥ धाऊं नाहि लाऊं वार वनिता वनाऊं अति हिय हरषाऊं निज वल को सचाऊं मैं। गाऊं मैं धमारि ढोल डफ को वजाऊं कहि होरी होरी खोरी खोरी लाल० ॥ १ ॥

रीवा मऊगंज मिश्रसेवकश्याम कवि जी।

गावत फिरत गारी गैल गैल गोकुल में
लीन्हे पिचकारी हाथ हाल नित पाऊं मैं।
वृज वनितान को पकरि बरजोरी करे ऊधम
अनेकन कहाँ लौं गुनगाऊँ मैं॥ आवैं इत
फाग में तो कौतुक लखाऊ वीर सबै श्याम
सेवक सो कसर चुकाऊं मैं। खेलन न आऊं
ना कहाऊ वृषभानसुता जो न गहि आज
नंदलाल को॥ १॥

बाबू शिवनंदनसहाय जी (बली बांकीपुर)

होरी के दिनान जो पै करी बरजोरी कान्ह
भई कहा हानि देख सॉचई सुनाऊं मैं। प-
करि लिआऊ बरसाने बीसवीसे काल्ह बद-
लो चुकाऊं उर आनद बढ़ाऊ मैं॥ सपथ
कराऊं सिव मुरली छिनाऊं तिमि मोतिन भ-
राऊं माँग नागरी बनाऊ मैं। सारी पहिना-
ऊ सुठि कचुकी कसाऊं पुनि दै दै करताली
आली लाल को०॥ १॥

दासापुर बलदेवनगर द्विज बलदेव कवि।

द्विज बलदेव आज ऐसी मन आवत है वृन्दावन खास रासमण्डल मचावो मैं। त्यो र तानि सौतिन को ताय तन तापन ते सान सरसाय मान लीकहि लचावो मैं॥ पूरि अ-भिलाषैं सब हीरे के हवालन को भाखि रुचि राखि रूरे रङ्गन रचावो मैं। बार बार लाय उर चूमि मुख-चन्द चारु नैनन निहाल करि लाल को० ॥ १ ॥

श्री०ठा० महेश्वरबकसिंहजी तालुकेदार रामपुर मथुरा।

धूँधर धमारिन मैं पीच पिचकारिन मैं गोपन सौं गैल अङ्ग आपनो बचावौं मैं। डारि कै अबीर बलबीर पै महेश्वर जू गोरी साथ लैकै रङ्ग रोरी को रचावौं मैं॥ बाजने बिजै के बजवाय बृषभानसुता जीति फाग लेहौं रीति खेल की खचावौं मैं। भाल मैं रचाय बेंदी आँगुरी गडाय गाल बाँह गल माल करि लाल को नचावौं मैं॥ १॥

दासापुरनिवासी द्विजगग कवि।

सखिन के सङ्ग में सिंगार साजि षोड़स हूँ उरज उतङ्ग रङ्ग रोरी को रचावौं मैं। चन्द सम आनन दसनदुति द्विजगङ्ग दामिनी के मध्य रेख मीसिका मचावौं मैं ॥ भृकुटी कमान तानि कँवर कटाच्छ नैन हेरि तन सौतन को तापन ते तावो मैं। चाल मतवाली चलि माल धारि मुक्तन की जाल के अनङ्ग नन्दलाल को० ॥ १ ॥

पटनानिवासी प० गोवर्द्धननाथपाठकउपनाम नग कवि।

भलेही कह्यो तू करै चतुर प्रवीन वाहि सैकरन वारनि ते मूरख वनाऊं मैं। जैसो ही कहति हम तैसोही करत नातो मान करि बातन में पावन पराऊं मैं ॥ सौगँध खिलाऊँ अरु हाहा कोटि भांतिन कों छाडों नाहिं एको पल सामुहें विठाऊं मैं। कवि नग साँची कहों नैनन की कोरन पै भौंहन मरोरन पै लाल० ॥ १ ॥

बाबू बिहारीसिंह उपनाम रसराज कवि छपरा ।

प्रेमी कहवावत बिहारी हम मान लीनी जांचि जांचि हारी कहो कहाँ लों जचाऊ मैं। ठग बटमार चोर लम्पट लवार ताकी सेखी सान भारी बात केतिक पचाऊं मैं॥ विनय सुनायहारी बहुत बोलायहारी तांको नाक ह्वै के दोष बहुत बचाऊ मैं। देखेगी पसार आंख रहेगी न मन मॉख एको दो घरी मे बीर लाल फो० ॥ १ ॥

राज्यमानप० शिवप्रसाद जी कवीश्वर के पुत्र देवीशरनजी कवि

ऊधम मचाऊ धुधुकीन दै धमारि गाऊं गोल ग्वाल बालन ते पकरि लिआऊं मैं। नथ पहिराऊ सिर ओढ़नी ओढ़ाऊं फेरि घूघट कढाऊं पग पैजनी पिन्हाऊ मैं ॥ चंदन लगाऊं भाल बिंदुली दिवाऊ मंजु कज कर पायन में मिंहदी रचाऊ मैं । लली जू तिहारी सौंह आयसु जु पाऊं आजु गालन गुलाल लाइ लाल० ॥ १ ॥

श्री जगदीशलालकवि कसबे पैंतेपुर।

राधे वृज की नवेलिनै लै गई ठानि यह कान्ह पै विसेषि फाग केलिनै रचाऊ मैं। झेलि पिचकारिनै अबीर मुख मंजु मेलि जंगली गुलाल लाल धूँधरि मचाऊ मैं॥ छरकि छवीलो नटवर गाहि गोल निज विरचि छवीली काम कोरि ललचाऊ मैं। वीर वृषभान की किशोरी न कहाऊ जो पै आज होरी खेलत न लाल को० ॥ १ ॥

पपर

आज रङ्ग धूंधरि गुलाल की मचाऊं भूरि भीर में गॅभीर पिचकारी झारि लाऊ मैं। गाऊ मैं धमारि धरि लाऊ वलवीरहि अबीर मुख लाऊ सोभ सौगुनी बनाऊ मैं॥ विरंचि नवल सुदरीन लौं लला को वलि जंगली कलानि आपनी को दिखराऊ मैं। तौ सही सुजान मैं ललित ललिता हौं जो पै फाग खेलिवे मैं प्यारी लाल० ॥ २ ॥

जिला दरभङ्गा निवासी बाबू श्रीविश्वनाथ झा।

कसर सधाऊं आज चीर हरिवे की बीर रहियो सचेत रूप वलके वनाऊं मैं। जानि वलदाऊ बिश्वनाथ आ मिलैगो गाहि झट पट पीत छोरि चूँदरि पिन्हाऊं मैं॥ कोऊ दृग ऑंजि कोउ वेसरि दै वेंदी कोउ घूघुर वँधाय ब्रजराज पै लेजाऊँ मैं। तारी वज-वाऊ प्यारी नन्द जसुदा हूँ तै न ललिता कहाऊं जौ ना लाल को नचाऊँ मैं॥ १॥

जिला भागलपुर श्रीमनमोहन कवि।

सेंदुर सलोनी रचि विरंचि सुवेंदी चारु मृगमद भाल लरैं मोतिका सजाऊँ मैं। तङ्ग कसि कंचुकी उतङ्ग जोम जौवन की रङ्ग उमहत अँचि अञ्चल दुराऊँ मैं॥ मोहन जू आरसी के आंगन अनूप वसि छवि वग-राउँ छैल छाँह दरसाऊँ मैं। चाय भरे ने-सुक नवाय मुसुकाय वार वार तरसाय हिये लाल को नचाऊ मैं॥ १॥

विध्यर्चेचपश्चा श्रीभगवानदत्त दूबे ।

ल्याऊँ गहि गोल ते अमोल गोल गाल वारो गुलचा लगाऊं करो भाई मनचाऊँ मैं। घेसरि पेन्हाइ औ गुदाइ वार मोती डारि सारी पहिराइ हार कंचुकी सजाऊँ मैं ॥ भगवान होरी को सर्वाङ्ग साजि गोरी सबै अबिर लगाइ जाइ जसुदा देखाऊँ मैं। हाट बाट घाटन गली में द्वार गाउँ गाउँ यों मचाऊ नन्दलाल

गयानिवासी प॰गि॰

ऊधव हमारो मन
हाय कहाँ जाऊ कहाँ
गिरधारीलाल कहाँ मु
कछाय बनमाल पहिरा
दै के माखन चखाऊँ फे
मैया कहवाऊँ मैं। कहा
पियावौं कहां लड्डुआ के

श्री गोकुलेशो जयति ।

कविमण्डल

की

समस्यापूर्त्ति

मिती चैत व० ८ वार शुक्र सं० १९५२

सोरहवां अधिवेशन

खसखाने में ।

गोकुलनरेश गोस्वामी श्री१०८ महाराज कन्हैयालाल जी ।

ललित लतान ते बयारि छूटी मन्द मन्द महल मनोज मोज द्वार दरीखाने में । अंतर गुलाब स्वच्छ सेज पै सुपेदी ठीक बीजना डुलत रसरङ्ग सरसाने में ॥ हौद भरे सीतल फुहारन ते फ्वार छूटैं प्रीतम प्रिया के सङ्ग अदर जनाने में । खेलैं खेल जुगल किशोर ह्वैदै खोलि खोलि खूब खसचोहि खिली खासे खसखाने में ॥ १ ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी।

आये हौ कहाँ ते झकझोरे घाम ग्रीपम के पथिक हवास है तुम्हारो ना ठिकाने मे। चलत न कोऊ ऐसी जेठ की जलन माहि बेनी द्विज आप सा बटोही या जमाने मे ॥ ताते मानि मेरी खैर जान की चहौ तो चलौ हासिल नही है देह नाहक जलाने में। सीतल सुगधन सो सीतल करौ जू छाती दिवस बितावो बसि मेरे खसखाने में ॥२॥

काशीनिवासी बृजचद जी बल्लभीय।

- प्रकृत परा को जिन धारण किये है गति तिनकी रहति निजानन्द के निसाने मे। ईस बस तेऊ पै कहावत है नित्य मुक्त परम सुजान बृजचद गुन गाने मे ॥ आत्म अन्तरात्म सूत्र आत्म परमात्म रूप पकृत परेस काहि देखत अपाने मैं। अपरा अधीन घोर घाम को विलोकत ही जाइ कै लुकात है जनाने खसखाने मे ॥ ३ ॥

काशीनिवासी बाबू माधवदासजी ।

हरे हरे कुंजन के पुज मे वहारदार वगला वुलंद वेस वानक वनाने में। छूटे जलजन्त्र झार झरना से झरें नीर त्रिविध समीर लगै दूर ते सहाने में ॥ माधव जू गजरा गुलाव को गले मे मेलि गुलापास पास धरे फूल गुलौंदाने मे । गाने मे वजाने मे रिझाने में प्रवीन प्यारी जेठ की वहार लेत वैठि खसखाने मे ॥ ४ ॥

काशी निवासी पण्डित केदारनाथ जी ।

लागी वहै कठिन कृसान सी वयारि तीखी ग्रीपम प्रताप छायो पुज तहखाने में। आकर प्रभाकर के भौन ते कढ्यो ना जाय जिय घवरात है दिनेस सरसाने मे॥ आँवा सो अगार लाग्यो तपन केदार तिन्न चैन ना परत गिरि-कंदरा लुकाने मे। फहरैं फुहारे नीर होजन हजारै भरे तौऊ ज्वाल माल की जलाका खसखाने में ॥ ५ ॥

जिला बनारस सरायमोहन निवासी बा मुकुन्दलाल जी।

तत्व ज्ञान जोग धोती नेती प्रत्याहार ऊधो संजमादि आसन मुकुन्द गुनगाने में। प्र- णव विचार प्राणायाम को विधान ध्यान राख्यो न लगाय थोरो वचन बनाने में॥ भावत न एको उपदेस येहि प्रीत माहिं जाके तन बीती सोइ जानत जमाने में। भये विपरीत तनु दाहत सुधांसु हमैं त्रिविध स- मीर लूह लागै खसखाने मे॥ ६॥

श्रीकविराज गुलाबरायजी बूंदी।

जागि उठी बाल के वियोगआगि अङ्गन में बाढत है दूनी निशिबासर बिताने मे। शिशिर विशेष शीतहू में ना रुकत क्योंहूँ ताप सी चढ़त चारु चदन चढ़ाने में। सु कवि गुलाब वारि छिरके पसेव चलैं बढत विशाल सास वर्फ वारि पाने में। मरी मरी भापि सो बयार विजना की रोकै बरी घरी वोलै बैठी खासे खसखाने में॥ ७॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूंदी ।

ग्रीषम के घाम की भयंकर भराव भरी बहन बयार लागी जेठ मास आने मे । ताही समै चंदन में चंद्रक मिलाय चारु अङ्गन लगाय मिलि नेह सरसाने में ॥ चंदकला सब ठॉ सिचाय कै गुलाव नीर सखियाँ अपार खरी बीजना चलाने मे । रहत हमेस जहाँ माघ की सी राति भई राधे श्याम सोवत रसाल खसखाने मे ॥ ८ ॥

अजमेरनिवासी श्रीकिशोरीलाल जी रावत ।

जाके मद छाके नैन बाँके अविलोकि लला भूलिगे छलान हिय प्रेम सरसाने मे। आज सोई सुंदरि किशोरी मैन-सुंदरि सी सोहै मनि मंदिर सुगंधित सुहाने में ॥ आई हों उताली वेगि ये हो वनमाली चलि देखिये बहाली वा गुलाव के विताने में। खोलि कें खजाने खूब खूबी खुसवोयन के बैठी बीच दोयन के नीके खसखाने में ॥ ९ ॥

श्री जगनीलालकवि कसबे पैतेपुर।

आवत निदाघ व्याल विलन लुकान लागे व्यालन विशाल लव सरन समाने में। छूटै लगे हौजन फुहारे लगे ढारे मञ्जु जङ्गली उसीरन व्यजन सुखसाने में॥ लागे चोवा चन्दन कपूरन लिपाने गेह केवरा गुलाब आब लागे छिरकाने मे। पंकज प्रयंकन पटीर पंक अंक लाय लागे कोमलाङ्गी जन राजे खसखाने मे ॥ १० ॥

को॰ मिकवि॰ ला मारकण्डेलालजी उपनाम चिरजीव कवि।

पवन की हवा हमै लूये सी लगत अङ्ग रंग हैं कुरंग सीरे बागन के जाने में। केवडे की टट्टी सींची भट्टी सी जनात तृत झुलसै सरीर ये गुलाब के नहाने में॥ बिना प्रानप्यारे के सुकवि चिरजीव भाषै ताप सी चढ़ै है हमै चन्दन लगाने मे । सीतल सुपाटी प्यारी आग सी जरावै अङ्ग आँच सी लगै है हमै खासे खसखाने मे ॥ ११ ॥

अपर

स्वच्छ है मकान अरु भरयो है सुगंध जामें
सिकन न दीसै जहाँ चाँदनी बिछाने में ।
आलन में पालन सी सुन्दर गिजा है सजी
आसव अँगूरी जहाँ बोतल सिहाने में ॥
जेठ की दुपाहरी में कवि चिरजीव भावे
होय जो किवाड़ बन्द दासिहू के आने में ।
जीवन को सारो फल पल में मिलै है प्यारे
मिले जो नवोढ़ा कहूँ खासे खस० ॥ १२ ॥

पटनानिवासी बाबू पन्ननलाल जी।

ग्रीषम को भीषम उताप ना गढ़ावे नेकु
दुख ना पहार के से दिन के बिताने मे । धूप
की कड़ाई घोर लूक की चलाई तन स्वेद
अधिकाई नाहिं आव दरसाने में । तिन्हे
तो सुसील सदा मोद औ प्रमोद अहे वेई
जग जोग भागमान पद पाने में । लेपि तन
चंदन कपूर प्रानप्यारी संग विविध विनोद
करें बैठि खसखाने में ॥ १३ ॥

मयर

ऊधव सुसील तू हौ चतुर प्रवीन महा
मेरी बुद्धि जोग नाहि तोहि समझाने में।
नेकु तो विचारो हिये अबला विचारी यह
कौन भाँति जोग अहैं जोग के कमाने में।
सीत की न भीत सही आतप उताप कबौं
सुख सो बिताई सदा स्याम के जमाने में।
बागन में कुंजन में तरनि-तनूजातीर रितु
अनुसार तोशखाने खसखाने मे ॥ १४ ॥

श्री०ठा० महेश्वरबक्षसिंहजी तालुकेदार रामपुर मथुरा।

लेती नाहि जीवन को लाभ हालही के
भाखि माखि कै न पैहै मोद मन अनुमाने
मे । इत विरहागि उत ग्रीषम तपत महा
प्रीति करु सकुल सँयोग सुखसाने में॥ सौंह
करि हित की महेश्वर सिखावत है पाछे प-
छितैहै तीर सौतन के ताने मे। बीती जात
जोवन-बहार बृजराजै मिलु खजनदृगी तू
उर खोलि खसखाने में ॥१५॥

दातापुर बलदेवनगर द्विज बलदेव कवि।

मान करि कबलौं मरैगी विरहागि बीच पाइहै सँयोग सुख कैसे कै रिसाने में। भूले मति बावरी विचारि बलदेव कहै त्यौर तानि लीन्हो कत सौतन के ताने मैं॥ बीतीजात जोबन वहार ऋतु ग्रीषम यों प्रेम सिन्धु उर के तरङ्ग जिय जाने मैं। ख्याल कै विनै को बेगि मिलु बृजराज जू सों खंजनदृगी तू उर खोलि खसखाने मैं॥१६॥

गयानिवासो प॰ गिरधारीलाल जी शर्मा।

न द्रुम नवेली जित तित ह्वै नवेली आई माखन दही लै सिर लाखन वहाने मैं। तिच्छन तरनि तेज सहत वैसाख वारी तपित समीर झेलि सूनी गैल जाने मैं॥ गिरधारी गूजरी को तऊ ना गुपाल मिल्यौ वदित सहेट कुञ्ज कानन सुहाने मैं। भई मतवाली भूमि गिरी घूमि मणिहीन व्याली सी न पावै चैन खाली खसखाने मैं॥१७॥

कवित्त

घोर कलिकाल ये कराल रितु ग्रीषम है तरुण दिनेश ये अकाल परे जाने में। तपि गे अन्याय धूप पन्थी धर्म कैसे चले भाँति भाँति विपति तपित पौन आने में ॥ गिरधारी दावानल दिसै दिनवारी छुधा सींचिये सहाय अम्बु सरस बचाने में। करुणा मलेज में लपेटि जग वेगि अब राखौ राम अपनी निगाह खसखाने में ॥ १८॥

चपर

सोचत अवधवासी पूरित दृगाम्बु पुंज कहत उसाँस भरे सोक सरसाने में । हाय केक नन्दनी पै बजर परे न काहे वन जो पठाई मन्थरा के बहकाने में ॥ गिरधारीलाल सुकुमारि सिय सङ्ग दोऊ दई का करेंगे काल ग्रीषम के आने में । भानु कृत झार वे उजार में सहेंगे कैसे जौन रहे सोवत अमोल खसखाने में ॥ १६ ॥

लखनऊनिवासी लाला हनुमानप्रसाद जी ।

मीन की अवाई अनभाई भई सीत हारी पीत दिन दिन बाढी सीर नीर पाने मैं। नेकु नेकु बिजन बयार हू रुचन लागी चन्दन चहल चाह अङ्गन लगाने मैं ॥ हनुमान चैत चञ्चरीकौ चित्त मत्त जागी अभिलाख सब के गुलाब कलियान मैं । खूब खुसबोवैं खुस मुखी लै खुसी से सोवैं खस के अतर छिरकाइ खसखाने मैं ॥ २० ॥

दोधा मऊगल निवासी मिश्र सेवकश्याम कवि जी ।

मौज देनवारे है बरफ जल हौज भरे सीरी है सुमन सेज तकिया सिराने मैं। पंखे चलैं चहुँघा बितान सोहैं तामरस बढ़त प्रमोद खुसबोय के खजाने मैं ॥ पूरित गुलाब आब धरी है सुराही स्वच्छ छाके श्यामसेवक बिलास मनमाने मैं । छूटि रहे सुन्दर फुहारे चहुँओर खूब लूटिरहे दोऊ सुख आज खसखाने मैं ॥ २१ ॥

जिला भागलपुर चलमनगर निवासी मनमोहन कवि।

गुञ्जरत कोकिल कदम्ब भीर भौंरन के सुमन पर प्रीति सरसाने में। चमकीले चंद की चहुँघा चारु तैसी फवी चाँदनी चखन चोखे वज्जुल विताने में॥ तीर सो लगौहैं सीरो सौरभ समीर धीर चन्दन कपूर धूर केसर लगाने में। अतन उताप गात मोहन जगात दूनो सहि नहिं जात सुनो खासे खसखाने में॥२२॥

अपर

रंचक ललाई नहिं रंचक ललाई लगे ओठ गोल अमल कपोल दरसाने में। छूटि परे केसर उरोज पै मसकि रहे कचुकी कसौटी चोटी चारु उरभाने में॥ लोचन के कोचन ते कारी कढ़ि मोहन जू आवत ना वार वावरी तूँ सरमाने में। अङ्ग अरसाने रतिरस वरसाने श्रम सीकर जुठाने वसिखासे खसखाने में॥२३॥

पटनानिवासी पं० गोवर्द्धननाथपाठक उपनाम नग कवि।

आजु रितु ग्रीषम को लेत सुख दोऊ
मिलि मैन-रस चैन मन मोद सरसाने में।
सखिन समूह सुठि-सेवा हित ठाढी अहैं
लीने सुभ मौर चौर बीजना डुलाने में॥
कोऊ पान काऊ लौंग इतर इलाची देत
कोऊ जो प्रवीन सो लगी है तान गाने मे।
कवि नग याही विधि विलसै विहारीलाल
प्यारी सग सेज खूब खासे खसखाने मे॥२४॥

अपर

एरी बीर पीरन की गनना गनाऊ काह
दह्यो जात देह मम ग्रीपम के आने में।
एक तो रितूही उष्ण दूजे जोर ज्वानी हुस्न
तीजे बिरहाग्नि वाज आवैं ना जराने में॥
चौथे री पपीहा पिक कूकें हूक देवें हीय
पाँचे पंचबान कटि बाँध्यो है सताने में।
साँची मैं कहत तोसो बिनु बृजराज नग
सीतल कै ह्वै है गात खासे-खसखाने मे॥२५॥

जिला सीतापुर मौजे जैपारपुर बाबूअनिरुद्धसिंह जी ।

चारो ओर गमला जमाय वेश फूलन के रहैं मशगूल व्योस इतर लगाने में । गहगे प्रसून परयक पे गुलावन के वेलन चमेलिन कतार रखवाने में ॥ कहै अनिरुद्ध छिरकाय अर्क केवरान विहँसि विहँसि करैं भाव मन माने में । ग्रीषम की तपन बिसाती नाहि अङ्गन में दपति विहार करैं खूब खसखाने मे ॥

जौनपूर निवासी पण्डित सीताराम जी शर्म्मा ।

सीतल सुगंधन सौं महल लिपाय राखो फूलन सँवारी सेज उज्वल विताने मे । परे दर परदा मुलायम दरीचिन में उडत कपूर धूर अतर खजाने में ॥ छूटत फुहारे वडे भारे खुशबोइ वारे केते उपचार नहि आवत वखाने में । सीताराम तामे प्रानप्यारो अरु प्रानप्यारी करै मनमाने दोऊ बैठि खसखा ने मैं ॥ २७ ॥

विध्यचेत्रपच्छा श्रीभगवानदत्त दुबे।

रेतन विछाइ कीनी चहल पहल वाल ॲतर गुलाब औ उसीर नीर साने मे। चन्दन पलंग मंजु चमक चँदोदन के चौसर चमेली चारु चतुर सयाने में॥ भगवान रावरे सो मिलिवे की चोप भरी चमकि रही है जोति जोवन खजाने में। मन सुखसाने में मनोज लपटाने भरी नव रंग बहार परी खासे खसखाने में ॥ २८॥

अपर

ग्रीषम में भीषम बयारि तन जारै दौरि मारै भानुकिरन निगाह परसाने में। जलचर विकल वेहाल परे थल चर हलचल हद्द के दिशान दरसाने मे ॥ ऐसी समै गौन कौन करत सु भगवान काकोदर कोश में मृगेन्द्र सुखमाने में। तर तहखाने मे उसीर रस साने तऊ लागत लपट्ट लूह खासे खस० ॥

लाला महङ्लदास जी कसबे पैंतेपुर जिला सीतापुर।

श्याम श्याम रटत सदाही प्रेममानी आलि कुजन मिलाप करौ गाइ के वहाने में। नीर मिस पूषण कुमारि तट घाट बाट दरसत धाइ जाइ साँझ धेनु लाने मे ॥ मगल चढ़ायो त्योर ताकति तिरीछे नैन एती रिस ठानी क्यों अबीर बरसाने मे। चलौ खेलौ फागु रागु रोचन बढाइ गावो ग्रीषम वसंत नाहि बैठौ खसखाने में ॥३०॥

बाबू बिहारीसिंह उपनाम रसराज कवि छपरा।

बनन में बागन में सरिता तडागन मे नद मे नदीश में दिखात आसमाने में। भनत विहारी चाँदनी में चन्दमण्डल मे चहरु चिरैया चंचरीक अलसाने मे ॥ बीथिन मे वृज में विनोद वनितान तामें अवनी अवास मे सुवास रसखाने में। चन्दन कपूरधूर केवडा गुलावन में ग्रीषम के झार दरसात खसखाने मे ॥३१॥

चपर

विजन डुलावो अलवेली खड़ी आस पास अतर लगावे नववाला शौक साने में। पन्नन के पानदान लिये एक बीरा देती एक लगी चन्दन कपूर वगराने में ॥ जलयंत्र जालन ते छूटत फुहारे भारे चौदिसि सुमन जाल सोहे लहराने में । वीणा लै प्रवीना कोऊ बैठ के सुनावे गान पौढे है विहारी प्रान-प्यारी खसखाने में ॥ ३२ ॥

मिर्जापूर गोस्वामी माधोगिर स्कूल ग्रामपुर।

देखत भभूक लूक लपक दुपहरी में भभक भकोर भभा झोंक पौन आने मे । दीन्ही भरवाय जल केवडा फुहारन में भर सो लगाई सुखदाई थोक थाने मे ॥ भाँति भाँति सुमन सुगधवारे सेज पारे सीरी सी बयारि देत वीजन चलाने मे । ग्रीपम में कत परजंक लै मयकमुखी पौढी सो इकत ह्वै निसक खसखाने में ॥ ३३ ॥

ग्रामनिवासी कविराज लछिराम जी।

चहल नौल नहरैं गुलाब नीर घन-
सुगंध सरसाने में। पावड़े सुमन
सुमन सेज संगम सरोजहार बगर
॥ फहरैं फुहारे हीर हौजन समौज
राम सावन फुही लौं सनमाने में।
लाकैं जेठ ज्वालि या अतंक वृज
पति रहस खसखाने में ॥ ३४ ॥

अपर

नो बरफ के विसाल बाग मंदिर
र बिजन बिलास बरसाने मे।
तर गुलाब नीर केवरा के लहरैं
र हौज परमाने मे ॥ लछिराम
नि आवरन मंद चन्द्रक चुनीन
मा लखाने में। किरतिकिसोरी
किसोर वृज बरसत बगर बहार
में ॥ ३५ ॥

पयो
चन्दन
सार बरफ
परमानद
विताने मे
वीर लछि
जालिम ज
रैन दिन व

साला
त्यों पखा
अरगजा
अमल ही
ग्रीपम तर
प्रभा चन्द्र
सग नवल
खसखाने

दूसरी समस्यापूर्त्ती।

मन्दिर गुलाब के।

गोकुलनरेश गोस्वामी श्री१०८ महाराज कन्हैयालाल जी।

फूल हैं कली हैं वृक्ष ललित लता हैं सब विमल कलिंदिजा के कूल दरसाव के। पीत कुद भालो है निवारो राधा वेलि जुही ठौर ठौर चित्रित विचित्रित वनाव के॥ कौन है तिवारी गोख जारी हैं भरोखा भिरी द्वार रावटी के तहखाने है हिसाव के। खडी खड तीसरे सुराधिका निहारे छवि चलिये गुपाल लाल मन्दिर गुलाव के॥ १॥

बाबू रामकृष्णवर्म्मा सपादक भारतजीवन काशी।

जुगुलकिसोर सुखसुखमा अथार पेखि चख चकचौंधि जात मंजु महताव के। फवनि गुलाल औ मुकेसन की वेस लसै मात होत विसद बिछौना किमखाव के॥ एरी! चलु बीर वडे नैनन सुफल करु लुटत लुनाई के खजाने वे-हिसाव के। केलि-सुख संपति सकेलि रग रेलि झेलि राधिका-गोविन्द पौढे मं०॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी।

ऐसे मधुमास मे तिहारे हेत माधव जू बँगले बलन्द है बनाये ला जवाब के। बारादरी विमल बिलौर की सजी है वर आइने लगाये है मिसाल माहताव के॥ बेनी द्विज मुक्ता मनीनन की कोर कोर झालरे टकी हैं चारो ओर माहराब के। बेस बेस विमल बगीचन ते बीनि बीनि राधे ने रचे है मंजु मंदिर गुलाब के॥ ३॥

काशीनिवासी हुकमचंद जी बल्लभीय।

करीही निवेदना अधीन है लडैतेलाल दीन हम ऐसे जैसे मीन बिन आब के। तिन सो कहीही तब सादर सुजानवारी मिलिहो पियारे अस्त भये आफताव के॥ मेरे जान समय सोहावनो सुहायो वह परम प्रकास अब भये माहताव के। चलै री बुलाई मनभावन तिहारो तोहि सेवा कुंज माहि आज मन्दिर गुलाब के॥ ४॥

जिला बनारस सरायमोहन निवासी बा मुकुन्दलाल जी ।

जब ते रिसाय मुख मोरि रही कान्हर ते तब ते बिहाल बिलखात उर दाब के। केतो समुझाई मन धीरज न ल्यावै हाय करत न नेकु सुधि खाव औ नहाव के ॥ सुमिरि सुमिरि तव अङ्ग अङ्ग रूप रङ्ग उमग्यो अनंग सहि सकत न ताव के। हैं तो वे मुकुन्द पर रस के अधीन ऐसे जोहत हैं बाट बैठि मंदिर०॥

महाराजकुमार श्रीमान लाल त्रिलोकीनाथसिंहजी
उपनाम भुवनेश स्थान श्रीअयोध्या जी

तोरण गुलाब के गुलाब के बितान ताने परदे गुलाबी लगे ऐन आबताब के । सेज है गुलाब की गुलाब के धरे हैं गुच्छ फरस बिछे हैं त्यों गुलाबी कमख्वाब के ॥ भ्राजै भुवनेस धारि बसन गुलाबी रंग जटित गुलाबी हीरे भूषण सु फाब के । पानि में गुलाब गरे गजरे गुलाबन के मन्द मन्द जाति चली मंदिर गुलाब के ॥ ६-॥

श्रीकविराज गुनाबरायजी बूंदी।

लागत वसंत लेय सखियाँ सयानी सङ्ग अधिक उमग भरे अग अति आव के। जुगलकिशोर सिरमोर सब देवन के हिय हरखाय जाय पालक गुलाव के॥ बोलैं जहाँ कोयल भँवर भ्रमैं चारो ओर चोरत हैं चित्त खिले कमल सिताव के। फूलन के भूषन स-जाय तन श्यामा श्याम बन बनवाय बैठे मन्दिर गुलाव के॥ ७॥

श्रीमती चन्द्रकला बाई बूंदी।

डोलत हैं भौंर-पुंज गुजरत चारो ओर बोलत हैं कोकिला बचन अति आव के। खोलत हैं कोश जलजात वर वारिन में फूलत अनेक भाँति फूल दिलदाव के॥ चद कला वहत सुगंध मंद पौन जहाँ बल्ली तरु छाय रहे पल्लव सिताव के। खेलत हैं फाग घनश्याम लै सखान साथ बन बनवाय वेस मन्दिर गुलाव के॥ ८॥

अजमेरनिवासी श्रीकिशोरीलाल जी रावत ।

कालिह केलि कुञ्जन सहेलिन के सङ्ग जाइ मोही अवलोकत सरूप मलकाव के । नीके उपचार करे तवतैं किती के तऊ फीके परे रङ्ग ढङ्ग मुख महताव के ॥ आवैं काम एक न किशोरी तन तापन को नेक न घटावैं छिरकाव गुलआव के । येरे लाल तेरे ही वियोग भरी बाल वहै चम्पक-छरी सी परी मन्दिर गुलाव के ॥ ६ ॥

श्री जगजीलालकवि कसबे पैतेपुर ।

आज वहि वाल को हवाल पूछिये न लाल हाल ह्वै रह्यो है जिमि मीन विन आब के। छीनि सी गई है छवि छलक छिनेक ही मैं फीके परे रङ्ग मुख मंजु महताव के ॥ हारी बूझि जङ्गली कितेक आकुली को हेत आनन तैं कढत न आखर जवाव के । ढारै सातिसाँसन उसासन मैं ऐहो कान्ह हा हारि उचारै परी मन्दिर गुलाव के ॥ १० ॥

सारी नील गोरी को औ साँवरे को पीतपट भूषन अनूप अङ्ग अङ्ग लाजवाव के। लाड़िली को चन्द्रिका लला को सिर मोरपच्छ अच्छ अनियारे पै दवाने नेह दाव के ॥ ये जू प्रान प्यारे चलि लोचन सफल कीजै कवि चिरजीव ये हैं कारज सत्राव के। डारे गले वाँहीं अरु आँनद उमङ्ग भरे राधा कृष्ण राजैं आज मन्दिर गुलाव के ॥ ११ ॥

जहाँ है गुलावन के फूल के वनाये घर काहू के विनोद हेतु सुखमा हुवाव के। जहाँ है गुलावन के नीर के करावे आदि सुन्दर सुगन्धवारे औसत हिसाव के ॥ और हू अनेक गृह कवि चिरजीव भाषै जहाँ है सँवन्ध वाके फूल और आव के। यौंही वह धाम जाके स्वामी को गुलाव नाम सवही कहावैं प्यारे मन्दिर गुलाव के ॥ १२ ॥

पटनानिवासी बाबू पत्तनलाल जी।

क्याही है गुलाबी की सुसील जू बहार अहा देखि मन फूलजात फूल ज्यों गुलाब के। पट है गुलाबी छत ढंग है गुलाबी बिछी चाँदनी गुलाबी फूल धरे है गुलाब के॥ कंकन गुलाब के सँवारे हैं सुकर माहिं धारे उर माहिं हार गजरे गुलाब के। सखिन सखान हू सजाय कै गुलाबी साज राज रहे स्यामा स्याम मन्दिर गुलाब के॥ १३॥

काह कहौं सोभा कहिजाय ना सुसील कछू बेगि चलि देखि लेहु धीर पग दाब के। जोर सों चलौगे तो तुम्हारे पग आहट ही कारन बनैंगे होन कारज खराब के॥ अँखें हौं निहारी वाके मुख की उँजारी वारि डारौं मनवारी आब लाख महताब के। चन्दन कपूर खस अङ्गन लगाती प्यारी बीजन कराती बैठि मन्दिर गुलाब के॥ १४॥

वीर वहुतेरे गुनी मण्डली जुरे हैं आज ढोलक सितार बीन तवले रवाब के । गायक अनेक त्यौं ही वहुदेस देसन के उत्कल कलिङ्ग अङ्ग वङ्ग पनजाव के ॥ रहे हैं वजाय गाय होत हैं प्रमोद महा देखत ही होत तन मन विनु ताव के । वेगि चलि देखिलै सुसील सखी चैत समा राजि रहे स्यामा स्याम मन्दिर गुलाब के ॥ १५ ॥

श्री०ठा० महेश्वरवक्ससिंहजी तालुकेदार रामपुर मथुरा ।

सुमन सँवारि सेज साजि कै सिंगार सव कञ्चनलता सी ,बाल अङ्ग अति आव के । लकुट मकुट सीस उर बनमाल डारे आइगे महेश्वर मनोज मन दाव के ॥ चारो चख चंचल नसीले नोकदार जुरे लावन चहत उर दोऊ तौन ताव के ।, चंद सम आनन दुचन्द छवि देन लाग्यो देखि बृजचंद-मुख मन्दिर गुलाब के ॥ १६ ॥

दासापुर बलदेवनगर द्विज बलदेव कवि।

सीतल सुपाटी टाटी वरफ बिछाय तापैं
छाय दीन्हो फरस फुहारे फेन फाव के ।
बलदेव बिसद बितान तान बेली बन आ-
वत दवागि नहीं ग्रीषम की दाव के ॥ चंद
सम चौगुनो चटकदार चन्द मुख हेरि
करि हारी होत मन महताब के । सुमन
बगारि गोरी गमनी गयन्द गति गलकाय
गैल गैल मन्दिर गुलाब के ॥ १७ ॥

दासापुरनिवासो द्विजगग कवि।

नैनन निरखि नील कंज कुम्हिलाने मृग
कानन पराने मीन बासी भये आब के ।
मोहनी सी छाय मनमोहनी बिहँसि मन्द
मोरन लगी है मान मैन महताब के ॥ त-
ड़ित जवाहिरात भूषन लसत अङ्ग द्विजगङ्ग
तारे तेज तन कन ताव के । मौज भरी रा-
जत रमा सी रूपरासि मानौ मंजुल म-
यङ्क मुखी मन्दिर गुलाब के ॥ १८ ॥

गयानिवासी प गिरधारीलाल जी शर्मा।

कटि लखो तबते सराहे नहिं केहरी को मुख लखे माने ना स्वरूप महताव के। कुच लखो तबते न पूजत महेश्वर को नख लखे गने ना महत्व आफताव के ॥ गिरधारी लाल वीर तेरे दृग चचल को लखे गुन गुनत ना मृग की खिताव के। तो युग कपोलन के आव लखो ता दिन ते रुचे ना गुविन्द जू को मन्दिर गुलाव के ॥ १९ ॥

सम मे प्रभा औ प्रीति सोहत है सबै ठौर ऐसई वचन है प्रमाणिक किताव के। गिरधारीलाल सोय सोचि सोचि आवै हँसी ह्वै कर लहैया वृजराज सो खिताव के॥ सोहत न होय हैं जू कूवरी कुजाति ढिग सुन्दर कन्हैया मदहारी महताव के। कबहूं की सोहि सकै ऊधव विचारि देखो फूस झोपरी के संग मन्दिर गुलाव के ॥ २० ॥

मखनऊनिवासी लाला हनुमानप्रसाद जी।

परदे फरस गादी दिवारेँ गुलाबी झार छत में सितारे जगें गुलाबी हवाव के। चौदिस गुलाववारी फुहारे हजारे चलैं देवसर सम सद भरे हैं सराव के ॥ सुछवि प्रताप तेज देखि दवे देवाधिप दलि दलि गये मद मदन नवाव के। हनूमान सिगरे गुलावी ठाठ गोकुलेस सासदरी राजमान मंदिर०॥

जिलाभागलपुर वालमनगर निवासी मनमोहन कवि।

खौर करी केसर कपोल कुच गोलन पै वेसर वहार हार तीखन सु आव के। सौरभ सरस अङ्ग तरफ़ तरंग फैली मैन-मद मोहन जू वानी भरे भाव के ॥ घेरि घुँघरारे वार विथुरि विराजि रहे मुख की मरीचि वीच वने महताव के। मोद भरे विविधि विनोद पीतम के हँसि रसि वाल वसि मं० ॥

पटनानिवासी प गोवर्द्धननाथपाठक उपनाम गग कवि।

जैसही सु सोहैं स्याम नीलमनि आभा

सम तैसही सुस्याम पै प्रकाश महताव के। प्यारे कटि कध लसै पीतपट हाटक से प्यारी के वसन लाल रजित सहाव के ॥ कौन को बतावै नग वाढ घट काहि कहै भले हैं विचारी अहैं दोऊ ला जबाव के। विविधि विनोद वीर जुगलकिसोर करैं जोर के समाज आज मन्दिर गुलाव के ॥ २३ ॥

गयानिवासी रामलाल भैया गयावाल।

मुख-चन्द सोहैं अति मन्द भये हुते चंद हाँस कन्द सोहै हुती चाँदनी सदाव के। मोतीमाल सोहै ये नखतमाल हारे सम केस शनि सोहै अन्धकार भे विनाव के ॥ रामलाल कहै मानसाभिलाप लहै हारे रहै विपै ढिग विपयी अजाव के॥ ताव भरी गई त्यों अताव परी वाल लखी लानन सवाबी वीच मन्दिर गुलाव के ॥ २४ ॥

जिला सीतापुर मौजे जैपारपुर बाबू घनिकदसिंह जी।

वेलि चहुँघा ते लगी हरी हरी क्यारिन में

हौज भरे तामें बड़े सीतल सु आब के। छूटत फुहारे मनो मेघ झरि लावत हैं शीत उपजावत ज्यों देखे माहताब के॥ व्यजन चलत मंद मद वायु अनिरुद्ध तापिबे से होस उड़े जात आफताब के। जुही के प्रयङ्क पे सु प्यारी प्रान-प्यारे मस्त दोऊ मनभाई करैं मन्दिर गुलाब के ॥ २५ ॥

जौनपूर निवासी पण्डित सीताराम जी शर्म्मा ।

ग्रीषम की तपनि निवारिबे को बैठी आज सखिन समाज लीन्हे आलम सबाब के। चन्दन चहल चहूँ चाँदनी चँदोवा चिकै जामें खसखाने बने अजब हिसाब के॥ छूटत फुहारे भारे भीतर भवन आछे जहाँ जात रंचक न ताब आफताब के। सीताराम मौज भरी मारुत हिलोरैं लेत मालती निकुंजन में मंदिर गुलाब के ॥ २६ ॥

बाबू छेदनलालात्मज बाबू जगन्नाथप्रसाद पैंतपुर ।

बिना ब्रजराज ऊधौ काज न सोहात कोऊ

देह पियरानी चख मानो विनु आव के।
कुंदन को रङ्ग कौनु वारिज लजाइ जात
मुख पै सियाही जैसी बीच महताब के॥
बोलै लागी कैलिया वसंत जानि जारै जीउ
तलफत रैनि द्योस मीन विना आव के।
कैसी करौं कासों कहौं पीर निज जगन्नाथ
दावा से शरीर लागै मन्दिर गुलाव के॥२७॥

विध्यचिंचपण्डा श्रीभगवानदन दूबे।

अतर लिपाय छाय वरफ विछाइ राखी तरफ चहूँघा मंजु फरस सिताब के। चौंसर चमेली बेली चाँनती चँदोआ चद चाँदनी चमक चारु चटक सुआव के॥ भगवान रावरे चसक चोप मिलिवे की लखत वे ताव काम वाम वे जवाव के। तन छवि फाव के फवाय राखी सेरे सुख लाय मसनद वैठी मन्दिर गुलाव के॥ २८॥

वात को करत वात कहत वनत नाहिं गात की सु छवि जस प्रात महताव के।

ओठ लागे अजन कपोल पीक लीक लागे भाल लाल जावक परेत पग दाव के॥ माल उर वलय सुपीठ लागे भगवान लागे भुज-मूल कान-कुडल सुफाव के। आव के चेताव के सिताव मुख गोय लाल सोय रहो धाय जाय मन्दिर गुलाव के ॥ २६ ॥

बाबू शिवनदनसहाय जी (आजी बाकीपुर)

आई हौं पठाई वाकी चलो ना सिताव सिव नातो पछतैहो उदै होत आफताव के। चारों ओर अतर तैं तर हैं दिवार तिम तनैं हे चँदोवा जरवाफ कमखाव के॥ वसन की जिन्स सबै धारि आव ताव वारी गावत सहेली साथ वीना औ रवाव के । करत वेआव सारी छटा महताव वारी जोहति है बाट वैठी मन्दिर गुलाव के ॥ ३० ॥

बाबू विहारीसिंह उपनाम रसराज कवि छपरा ।

चौंगद दिवाल वने आले वसरा के चारु चल दल उपर नँचत भृङ्ग छाव के । जरदा

के छज्जा छत सुन्दर गुलाबी बेस बारे दर बने हैं सुमन रक्त आब के ॥ फर्श कवी है फूल अवली सेवती के स्वच्छ मानो फैली चान्दनी सुघर महताब के । छुटत फुहारे जल जन्त्रन तैं चारावोर बैठे हैं बिहारी बेस मन्दिर गुलाब के ॥ ३१ ॥

चैत चान्दनी में चम्प बरणी उमङ्ग भरि निज दुति दीव्य से लजावैं महताब के । मन्द मन्द चलति गयन्दन की हाँस्य कीन्हे देखत बहार बाग बिहँग तलाव के ॥ बीणा बाद सारङ्गी सीतार तबला के सङ्ग साँमाँ बनी बेस गान तान मैं सीताब के । झुमत नवेली अलबेली सङ्ग आस पास बैठे हैं बिहारी आन मन्दिर गुलाब के ॥ ३२ ॥

अयोध्यानिवासी कविराज लछिराम जी ।

भागभर्यो बाग बर मिथिलेस नन्दनी को नहरैं नदी लौं छवि छलकत आब के ।

लछिराम लालित सरोवर सरोज सङ्ग व-
गर वितान फूले फूल फल फाव के ॥ रघु-
नाथ लछिमन हीरे सुभ सीरे उदै सौंहैं
गौरि मैथिली वदन महताव के । चम्पक
चमेली वनबेलि मोगरा के वने मालती म-
वलिसिरी मन्दिर गुलाव के ॥ ३३ ॥

नवरंग वाग बरसाने के बगर बेस तरुल
फवारे अमरावती के फाव के । लछिराम
नहैं सरोज सर सौरि भित ओज हीरे हौ-
जनि मनोज महताव के ॥ मन्द मन्द ब-
रसैं सुमन मकरन्द भार ग्रीषम तपनि मैं
वसन्त श्री हिसाव के । मालाकार मजु मत्र
मोहन बरन भारैं वीर विस्व मोहन सौं
मन्दिर गुलाब के ॥ ३४ ॥

मिर्जापुर गोस्वामी साधोगिर स्कूल ज्ञानपुर ।

सारी है गुलाबी जरतारी छबि भारी
वारी अतर मो बासी खासी साधो जू गु-
लाब के । सेज सजी तैसी पुनि दलन गुला-

वन सौं झरत फुहारे भारे सामुहे गुलाव के ॥ दर औ दरीचन मे शोभित गुलावै गुल लपकै सुगन्ध गन्ध गमले गुलाव के । ग्रीपम के ताव गये देखत वे-आव भये गोरी गृह केलि मनो मन्दिर गुलाव के ॥३५॥

रीवानिवासी कविवर नरहरिवशोय बजेश कवि ।

गुंजरत मधुप मरन्द मद मोहित ह्वै मलय मिलित मन्द मारुत प्रभाव के । फहैं फुहारे नौल नहैं वृजेश चलैं विजन विमल सीचे सौरभित आब के ॥ प्यासे तुम पथिक मवासे कौन जो गइ तै सासे पन्थ प्रवल मयूप महताब के । मोद मई मंजुल निकुज के निकट आगे मिलिहैं मजेजदार मन्दिर गुलाव के ॥ ३६ ॥

इति ।